INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

REET

Level – 2

राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा

ॐ सरस्वती मया दृष्ट्वा, वीणा पुस्तक धारणीम।

हंस वाहिनी समायुक्ता मां विद्या दान करोतु में ॐ।।

भाग – 4

सामाजिक अध्ययन – 2

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2** " को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है । ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा (REET) लेवल – 2 भर्ती परीक्षा "** में पूर्ण संभव मदद करेंगें ।*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती हैं । अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं ।

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें – https://wa.link/98bnwi

Online Order करें – https://shorturl.at/ixJQI

https://shorturl.at/belyI

मूल्य : ₹	**संस्करण : नवीनतम**

राजस्थान का भूगोल		
क्र.सं.	अध्याय	पेज
1.	सामान्य परिचय	1
2.	भौतिक प्रदेश	17
3.	जलवायु	27
4.	अपवाह प्रणाली	35
5.	मृदा, जल-संरक्षण एवं संग्रहण	53
6.	कृषि एवं प्रमुख फसलें	59
7.	खनिज एवं उर्जा संसाधन	79
8.	राजस्थान की प्रमुख नहरें एवं नदी घाटी परियोजनाएं	97
9.	परिवहन	102
10.	उद्योग एवं जनसंख्या	108
11.	पर्यटन स्थल	119
12.	राजस्थान में वन सम्पदा एवं वन्य जीव अभ्यारण्य	123
राजस्थान का इतिहास		
1.	राजस्थान इतिहास के स्रोत	131
2.	प्राचीन सभ्यताएं	145
3.	राजस्थान के प्रमुख राजवंशों का इतिहास	153
4.	1857 की क्रांति में राजस्थान का योगदान	201
5.	राजस्थान में प्रजामंडल	204
6.	जनजाति व किसान आन्दोलन	206
7.	राजस्थान का एकीकरण	214
8.	राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व	219
राजस्थान की एवं संस्कृति		
1.	राजस्थान की विरासत (दुर्ग, महल, स्मारक)	230
2.	प्रमुख मेले एवं त्योंहार	241
3.	राजस्थान की चित्रकला	250

4.	राजस्थान के लोक नृत्य एवं लोक नाट्य	256
5.	लोक देवता और देवियाँ	258
6.	लोक संत	265
7.	लोक संगीत एवं वाद्य यंत्र	272
8.	राजस्थान में हस्त शिल्प कला	283
9.	रीति रिवाज एवं प्रथाएं	284
10.	राजस्थान की वेशभूषा एवं आभूषण	289
11.	राजस्थान की भाषा एवं साहित्य	291
	बीमा एवं बैंकिंग प्रणाली	
1.	बीमा एवं बैंक के प्रकार	301
2.	भारतीय रिज़र्व बैंक और उसके कार्य	303
3.	सहकारी समितियां	309
	शिक्षाशास्त्रीय मुद्दे – 1	
1.	सामाजिक अध्ययन की संकल्पना एवं प्रकृति	315
2.	कक्षा-कक्ष की प्रक्रियाएं क्रियाकलाप एवं विमर्श	316
3.	सामाजिक अध्ययन के अध्यापन की समस्याएँ	320
4.	समालोचनात्मक चिंतन का विकास	320
	शिक्षाशास्त्रीय मुद्दे – 2	
5.	पृच्छा / अनुभाविक साक्ष्य	322

अध्याय – I

सामान्य परिचय

प्रिय छात्रों, राजस्थान शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख राजस्थानी साहित्य विक्रम संवत 682 ई. में उत्कीर्ण बसंतगढ़ (सिरोही जिला) के शिलालेख में मिलता है।
मारवाड़ इतिहास के प्रसिद्ध लेखक "मुहणोत नैणसी"ने भी अपनी पुस्तक "नैणसी री ख्यात" में भी राजस्थान शब्द का प्रयोग किया है, लेकिन इस पुस्तक में यह शब्द भौगोलिक प्रदेश राजस्थान के लिए प्रयुक्त हुआ नहीं लगता।
महर्षि वाल्मीकि ने राजस्थान की भौगोलिक क्षेत्र के लिए "मरुकान्तार" शब्द का उल्लेख किया है।
जॉर्ज थॉमस पहले ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने सन 1800 ई. में इस भौगोलिक क्षेत्र को "राजपूताना" शब्द कहकर पुकारा। इस तथ्य का वर्णन विलियम फ्रैंकलिन ने अपनी पुस्तक **"मिलिट्री मेमोरीज ऑफ़ मिस्टर थॉमस"** में किया है।
जॉर्ज थॉमस:- जॉर्ज थॉमस एक आयरलैंड के सैनिक थे जो कि 18वीं. सदी में भारत आए और 1798 से 180। तक भारत में एक छोटे से क्षेत्र (हिसार-हरियाणा) के राजा रहे। इन्होंने राजस्थान को "राजपूताना" शब्द इसलिए कहा क्योंकि मध्यकाल एवं पूर्व आधुनिक काल में राजस्थान में अधिकांश राजपूत राजवंशों का शासन था। ब्रिटिश काल में इस क्षेत्र को "राजपूताना" कहा जाता था।
विलियम फ्रैंकलिन:-विलियम फ्रैंकलीन मूल रूप से लंदन के निवासी थे। यह जॉर्ज थॉमस के घनिष्ट मित्र थे। उन्होंने 1805 जॉर्ज थॉमस के ऊपर "A Military Memories of George Thomas" नामक पुस्तक लिखी थी।
अकबर के नवरत्नों में से एक मध्यकालीन इतिहासकार "**अबुल फजल**" ने इस भौगोलिक क्षेत्र के लिए "**मरुभूमि**" शब्द का प्रयोग किया है।
1829 ईस्वी में "कर्नल जेम्स टॉड" ने अपनी पुस्तक **"एनाल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान"** में सर्वप्रथम राजस्थान को "**रजवाड़ा**" या राजस्थान का नाम दिया था।
कर्नल जेम्स टॉड:- कर्नल जेम्स टॉड 1818 से 1822। के मध्य मेवाड़ (उदयपुर) प्रांत में एक पॉलिटिकल (राजनीतिक) एजेंट थे तथा कुछ समय तक मारवाड़ रियासत के ब्रिटिश एजेंट भी रहे। कर्नल जेम्स टॉड इंग्लैंड के मूल निवासी थे, उन्होंने अपने घोड़े पर घूम - घूम कर राजस्थान के इतिहास लेखन का कार्य किया इसलिए इन्हें घोड़े वाले बाबा के नाम से भी जाना जाता है।
कर्नल जेम्स टॉड को **"राजस्थान के इतिहास का पितामह"** कहा जाता है।
कर्नल जेम्स टॉड की पुस्तक एनाल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान" को **"सेंट्रल एंड वेस्टर्न राजपूत स्टेट्स ऑफ इंडिया"** के नाम से भी जानते है।
इस पुस्तक का पहली बार हिंदी अनुवाद राजस्थान के प्रसिद्ध इतिहासकार "**गौरीशंकर -हीराचन्द ओझा**" ने किया था। इसे हिंदी में "**प्राचीन राजस्थान का विश्लेषण**" कहते है।
महाराज भीम सिंह ने कर्नल की सेवाओं से प्रभावित होकर गांव का नाम "**टॉडगढ़**" रख दिया था, जो कालांतर में टाडगढ़ कहलाने लगा जोकि आज ब्यावर जिले की तहसील का मुख्यालय है।

(ख) राजस्थान की स्थिति:-

1. **राजस्थान की स्थिति "पृथ्वी" पर:-** पृथ्वी पर राजस्थान की स्थिति को समझने से पहले निम्नलिखित अन्य महत्वपूर्ण बिंदुओं को समझना होगा-
(क) अंगारालैंड/युरेशियल प्लेट
(ख) गोंडवाना लैंड प्लेट
(ग) टेथिस सागर
(घ) पेंजिया
(ड) पेंथाल्जा

नोट:- प्रिय छात्रों, कृपया ध्यान दें कि – आज से करोड़ों वर्ष पहले पृथ्वी सिर्फ दो हिस्सों में बटी हुई थी

1. **स्थल**
2. **जल**

जैसा कि आज भी है, लेकिन वर्तमान में यदि हम स्थल मंडल को देखेंतो हमें यह कई भागों में विभाजित हुआ दिखता है, जैसे सात महाद्वीप अलग-अलग है। उनके भी कई देश एक-दूसरे से काफी अलग अलग है इत्यादि। लेकिन बहुत पहले संपूर्ण स्थलमंडल सिर्फ एक ही था; इसी स्थलीय क्षेत्र को "**पेंजिया**" के नाम से जानते थे तथा बाकी बचे हुए हिस्से को (जल वाले क्षेत्र को) "**पेंथाल्जा**" के नाम से जानते थे। अब इसे नीचे दिए गए मानचित्र से समझने की कोशिश कीजिए-

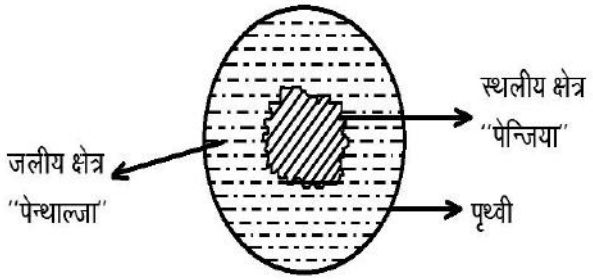

प्रिय छात्रों, पृथ्वी परिक्रमण एवं परिभ्रमण गति करती है अर्थात् अपने स्थान पर भी (1 दिन में) घूमती है, और सूर्य का चक्कर भी लगाती है। पृथ्वी की इस गति की वजह से स्थल मंडल की प्लेटों में हलचल होने की वजह से पंजिया (स्थलीय क्षेत्र) दो भागों में विभाजित हो गया जिसके उत्तरी भाग में उत्तरी अमेरिका, यूरोप और उत्तरी

एशिया का निर्माण हुआ इस स्थलीय क्षेत्र को "**अंगारा लैंड / यूरेशियन प्लेट**" के नाम से जानते है।
इसके दूसरे भाग (दक्षिणी) में दक्षिणी अमेरिका, दक्षिणी एशिया, अफ्रीका तथा अंटार्कटिका का निर्माण हुआ, इस क्षेत्र को "**गोंडवाना लैंड**"'प्लेट' के नाम से जानते है।
दोनों प्लेटों के बीच में विशाल सागर था जिसे "**टेथिस सागर**" के नाम से जानते थे।- इसको नीचे दिए गए मानचित्र की सहायता से समझते हैं-

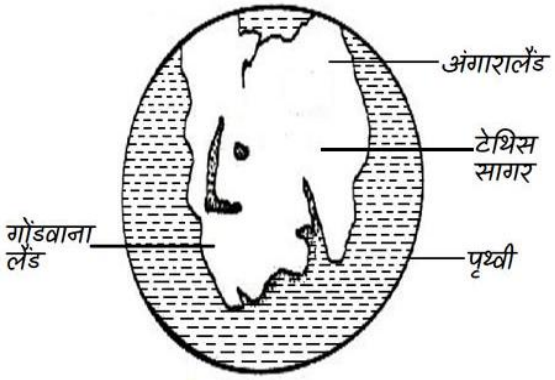

नोटः- राजस्थान का पश्चिमी रेगिस्तान तथा रेगिस्तान में स्थित खारे पानी की झीले "**टेथिस सागर**" के अवशेष हैं तथा राजस्थान का मध्यवर्ती पहाड़ी क्षेत्र (अरावली पर्वत माला) एवं दक्षिण पूर्वी पठार भाग "गोंडवाना लैंड" प्लेट के हिस्से है।

टेथिस सागर- टेथिस सागर गोंडवाना लैंड प्लेट और युरेशियल प्लेट के मध्य स्थित एक सागर के रूप में कल्पित किया जाता है जो कि एक छिछला और संकरा सागर था और इसी में जमा अवसादो के प्लेट विवर्तनिकी के परिणामस्वरूप अफ्रीकी और भारतीय प्लेटों के यूरेशियन प्लेट के टकराने के कारण हिमालय और आल्प्स जैसे महान पहाड़ों की रचना हुई है।

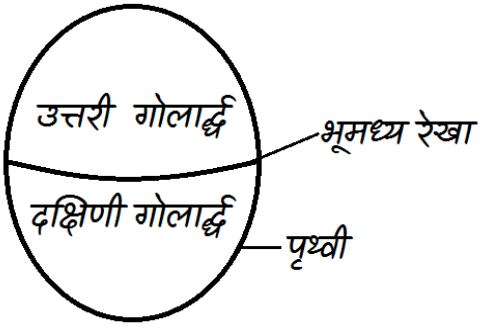

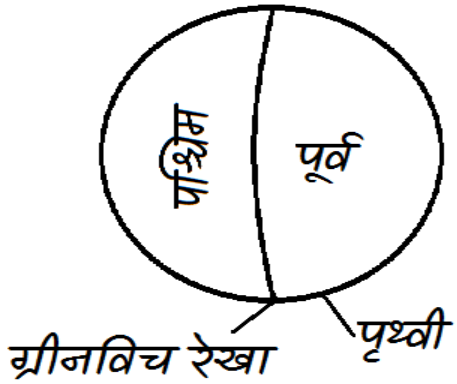

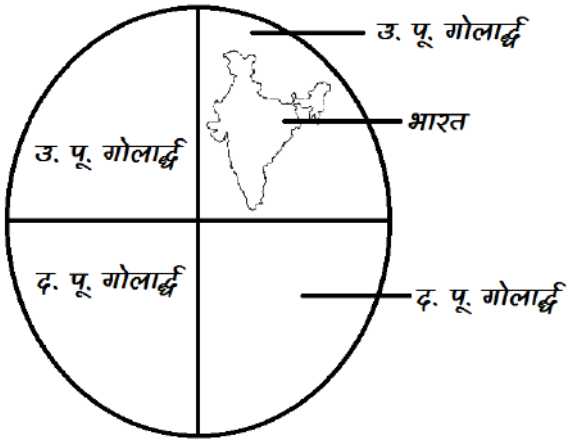

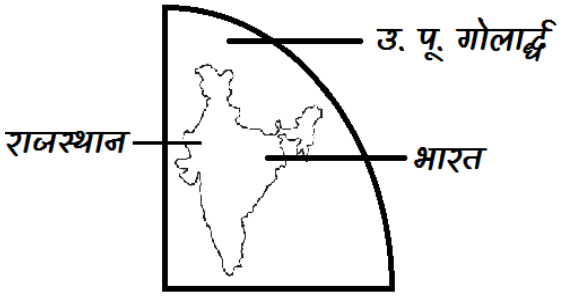

प्रिय छात्रों ऊपर दिए गए मानचित्र के बारे में एक बार समझते हैं।

मानचित्र-।

पृथ्वी को भूमध्य रेखा से दो भागों में बांटा गया है-

1. **उत्तरी गोलार्द्ध**
2. **दक्षिणी गोलार्द्ध**

इसी प्रकार ग्रीनविच रेखा पृथ्वी को दो भागों में बांटती है-

1. पूर्वी क्षेत्र
2. पश्चिमी क्षेत्र

(देखे मानचित्र- 2)

नोट-

1. विश्व (अर्थात् पृथ्वी पर) में राजस्थान "उत्तर पूरब" दिशा में स्थित है। (देखे मानचित्र-)
2. एशिया महाद्वीप में राजस्थान "दक्षिणी पश्चिम" दिशा में स्थित है। (देखिए मानचित्र - 3,4)
3. भारत में राजस्थान उत्तर-पश्चिम में स्थित है। देखिए मानचित्र -4 (भारत)]

राजस्थान का विस्तार -इसका अध्ययन करने से पहले इससे जुड़े हुए कुछ अन्य महत्वपूर्ण बिंदुओं को समझिए-

1. भूमध्य रेखा
2. कर्क रेखा
3. मकर रेखा
4. अक्षांश
5. देशांतर

इन मानचित्र को ध्यान से समझिए-

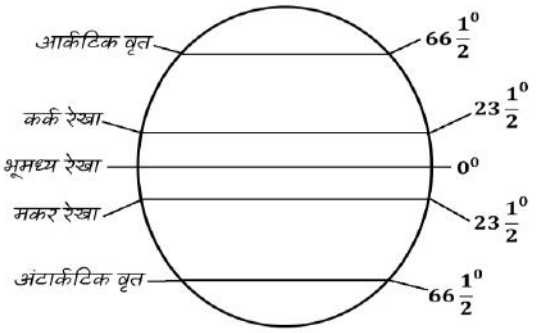

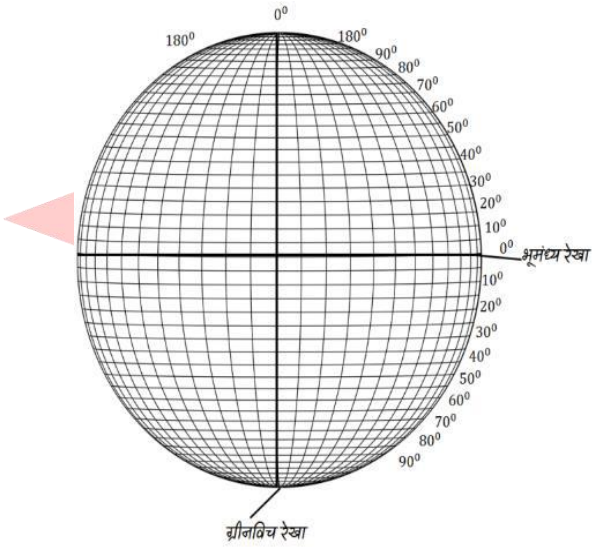

(मानचित्र न. 1)

(मानचित्र न. – 2)

नोट -भूमध्य रेखा :- "विषुवत रेखा या भूमध्य रेखा" पृथ्वी की सतह पर उत्तरी ध्रुव एवं दक्षिणी ध्रुव से समान दूरी पर स्थित एक काल्पनिक रेखा हैंयह पृथ्वी को दो गोलार्द्धों, उत्तरी व दक्षिणी में विभाजित करती है।

इस रेखा पर प्रायः वर्ष भर दिन और रात की अवधि बराबर होती, यही कारण है कि इसे विषुवत रेखा या भूमध्य रेखा कहा जाता है।

विषुवत रेखा के उत्तरी ओर पर कर्क रेखा है व दक्षिण की ओर पर मकर रेखा है।

नोट- पृथ्वी/ग्लोब को दो काल्पनिक रेखाओं द्वारा "**उत्तर-दक्षिण तथा पूर्व-पश्चिम**"में विभाजित किया गया है । इन्हें अक्षांश व देशांतर रेखाओं के नाम से जानते है।

अक्षांश रेखाएं- वह रेखाएं जो ग्लोब पर पश्चिम से पूर्व की ओर बनी हुई है, अथार्त भूमध्य रेखा से किसी भी स्थान की उत्तरी अथवा दक्षिणी ध्रुव की ओर की कोणीय

दूरी को अक्षांश रेखा कहते है। भूमध्य रेखा को अक्षांश रेखा माना गया है। (देखें मानचित्र -1)

ग्लोब पर कुछ अक्षांशों की संख्या (90 डिग्री उत्तरी गोलार्द्ध में और 90 डिग्री दक्षिणी गोलार्द्ध में) कुल 180 डिग्री है तथा अक्षांश रेखा को शामिल करने पर इनकी संख्या 181 होती है।

देशांतर रेखाएं- उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव को मिलाने वाली 360 डिग्री रेखाओं को देशांतर रेखाएं कहा जाता है। ग्रीनविच, जहां ब्रिटिश राजकीय वेधशाला स्थित है, से गुजरने वाली याम्योत्तर से पूर्व और पश्चिम की ओर गिनती शुरू की जाए। इस याम्योत्तर को प्रमुख याम्योत्तर कहते है। इसका मान देशांतर है तथा यहां से हम 180 डिग्री पूर्व या 180 डिग्री पश्चिम तक गणना करते है।

नोट –उपर्युक्त विषय को अधिक विस्तार से समझने के लिए हमारी अन्य पुस्तक '**भारत एवं विश्व का भूगोल**' पढें"।

राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार 23°3" से 30°12" उत्तरी अक्षांश ही तक है जबकि राजस्थान का देशांतरीय विस्तार 69'30" से 78'17" पूर्वी देशांतर है। (देखें मानचित्र A, B)

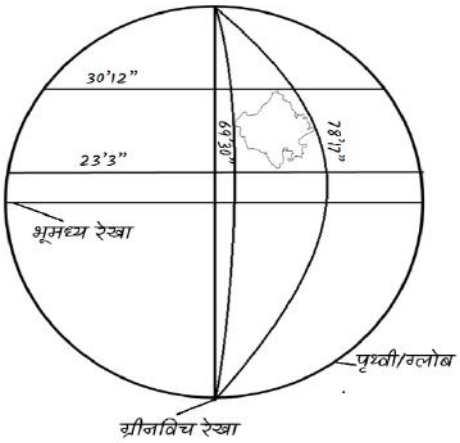

(मानचित्र-A)

नोट- राजस्थान का कुल अक्षांशीय विस्तार **7°9"(30°12" 23°3")** है तथा कुल देशांतरीय विस्तार **8°47" (78°17" 69°30")** है।

1° = 4 मिनट

1" =111.4 किलोमीटर होता है।

राजस्थान का कुल क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग किलोमीटर है जो कि संपूर्ण भारत का 10.41% है। भारत का कुल क्षेत्रफल 32,87,263 वर्ग किलोमीटर है जो संपूर्ण विश्व का 2.42% है।

1 नवंबर 2000 से पूर्व क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य मध्यप्रदेश था लेकिन 1 नवंबर 2000 के बाद मध्यप्रदेश से छत्तीसगढ़ को अलग होने हो जाने पर भारत का सबसे बड़ा राज्य क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान बन गया।

2011 में राजस्थान की कुल जनसंख्या 68,548,437थी जो कि कुल देश की जनसंख्या का 5.67% है।

- ***कर्क रेखा राजस्थान में स्थित:-***

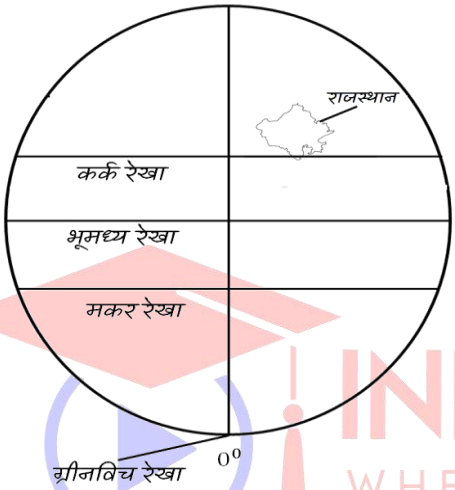

कर्क रेखा भारत के 8 राज्यों से होकर गुजरती है-

- **(राजस्थान, मध्यप्रदेश, झारखंड, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल, गुजरात, मिजोरम, त्रिपुरा)**
- राजस्थान में कर्क रेखा बांसवाड़ा जिले के मध्य से कुशलगढ़ तहसील से गुजरती है, इसके अलावा कर्क रेखा डूंगरपुर जिले को भी स्पर्श करती है अर्थात् कुल दो जिलों से होकर गुजरती है।
- राजस्थान में कर्क रेखा की कुल लंबाई 26 किलोमीटर है। राजस्थान का सर्वाधिक भाग कर्क रेखा के उत्तरी भाग में स्थित है।
- राजस्थान का कर्क रेखा से सर्वाधिक नजदीकी शहर बांसवाड़ा है।
- भूमध्य रेखा पर सूर्य की किरणें सर्वाधिक सीधी पड़ती है, अतः वहां पर तापमान अधिक होता है। जैसे-जैसे भूमध्य रेखा से दूरी बढ़ती जाती है वैसे-वैसे सूर्य की किरणों का तिरछापन बढ़ता जाता है और तापमान में कमी आती जाती है।
- राजस्थान में बांसवाड़ा जिले में सूर्य की किरणें सर्वाधिक सीधी पड़ती है जबकि गंगानगर में सर्वाधिक तिरछी पड़ती है।

कारण- बांसवाड़ा सर्वाधिक दक्षिण में स्थित है तथा श्रीनगर सबसे उत्तर में स्थित है।

राजस्थान की भौगोलिक स्थिति के अनुसार राज्य का सबसे गर्म जिला बांसवाड़ा होना चाहिए एवं राज्य का सबसे ठंडा जिला श्रीगंगानगर होना चाहिए लेकिन वर्तमान में राज्य का सबसे गर्म व सबसे ठंडा जिला चूरु है। यह जिला सर्दियों में सबसे अधिक ठंडा एवं गर्मियों में सबसे अधिक गर्म रहता है इसका कारण यहां पाई जाने वाली रेत व जिप्सम है।

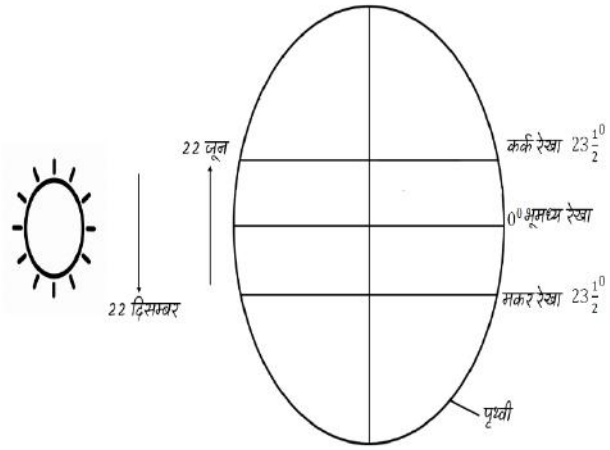

मानचित्र को ध्यान से समझिए

नोट- जैसे कि ऊपर दिए गए मानचित्र में समझाया है कि, सूर्य 21 जून को सीधा कर्क रेखा पर और 22 दिसंबर को सीधा मकर रेखा पर चमकता है। इसके अलावा 21 मार्च और 23 सितंबर को सीधे भूमध्य रेखा पर चमकता है। अर्थात् 21 जून को कर्क रेखा पर सीधे चमकने के बाद जुलाई, अगस्त, सितंबर .... दिसंबर में जैसे-जैसे समय बढ़ता जाता है वैसे-वैसे सूर्य का सीधा प्रकाश मकर रेखा की ओर बढ़ता जाता है, फिर 22 दिसंबर तक मकर रेखा पर पहुंचने के बाद जनवरी, फरवरी........जून में जैसे-जैसे समय बढ़ता है वैसे-वैसे सूर्य का सीधा प्रकाश कर्क रेखा की ओर बढ़ता है।

अर्थात सूर्य की सीधी किरणें कर्क रेखा और मकर रेखा के बीच में पड़ती है इस क्षेत्र को उष्णकटिबंधीय क्षेत्र कहते है। ध्रुवों पर सूर्य की किरणें ना पहुंचने के कारण वहां वर्ष भर बर्फ पाई जाती है।

इस प्रकार राजस्थान का सबसे दक्षिणी जिला बांसवाड़ा में सूर्य की सबसे ज्यादा सीधी किरणें पड़ती है (कर्क रेखा के सबसे नजदीक होने के कारण) इसलिए बांसवाड़ा को राजस्थान का सबसे गर्म जिला होना चाहिए, लेकिन चूरु सबसे गर्म जिला है (कारण-रेत) । इसी प्रकार सबसे उत्तरी जिला श्रीगंगानगर में सूर्य की सबसे ज्यादा तिरछी किरणें पड़ती है, इसलिए श्रीगंगानगर को राजस्थान का सबसे ठंडा जिला होना चाहिए लेकिन चूरु सबसे ज्यादा ठंडा जिला है (कारण-जिप्सम)

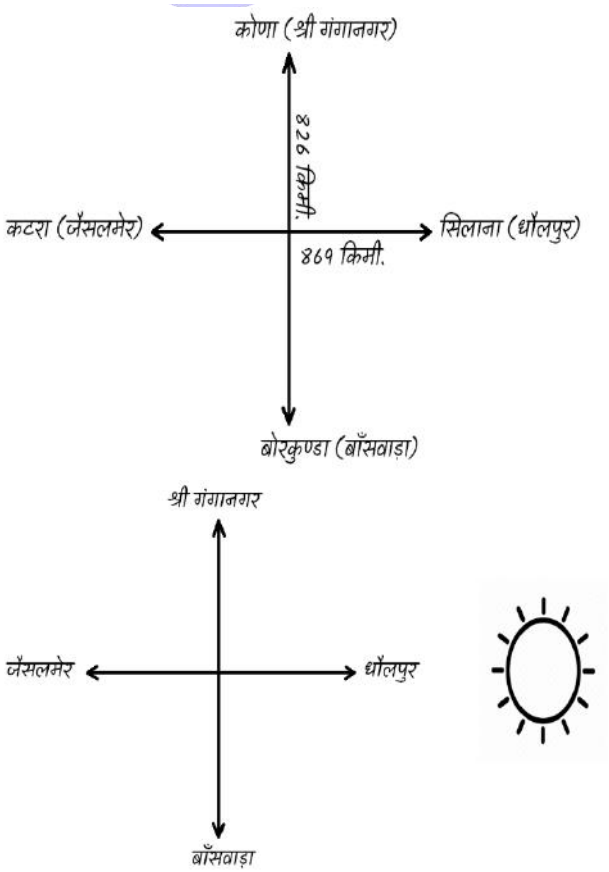

पूर्वी देशांतरीय भाग सूर्य के सबसे पहले सामने आता है, इस कारण सर्वप्रथम सूर्योदय व सूर्यास्त राजस्थान के पूर्वी भाग धौलपुर में होता है, जब कि सबसे पश्चिमी जिला जैसलमेर है। अतः जैसलमेर में सबसे अंत में सूर्योदय व सूर्यास्त होता है।

<u>विस्तार</u>:-

राजस्थान राज्य की उत्तर से दक्षिण तक की कुल लंबाई 826 किलोमीटर है तथा इसका विस्तार उत्तर में श्रीगंगानगर जिले के कोणा गांव से दक्षिण में बांसवाड़ा जिले की कुशलगढ़ तहसील के बोरकुंड गांव तक है।

इसी प्रकार पूरब से पश्चिम तक की चौड़ाई 869 किलोमीटर है तथा विस्तार पूरब में धौलपुर जिले के जगमोहनपुरा की ढाणी, सिलाना गांव से पश्चिम में जैसलमेर जिले के कटरा गांव (सम-तहसील) तक है।

<u>आकृति</u>

विषम कोणीय चतुर्भुज या पतंग के आकार के समान है। राज्य की स्थलीय सीमा 5920 किलोमीटर (1070 अंतरराष्ट्रीय व 4850 अंतर्राज्यीय) है।

रेडक्लिफ रेखा

रेडक्लिफ रेखा भारत और पाकिस्तान के मध्य स्थित है। इसके संस्थापक सर सीरिल एम. रेडक्लिफ को माना जाता है। इसकी स्थापना 14/15 अगस्त 1947 को की गई। इसकी भारत के साथ कुल सीमा 3310 किलोमीटर है। रेडक्लिफ रेखा पर भारत के ***तीन राज्य व दो केंद्र शासित प्रदेश*** स्थितहै।

1. पंजाब (547 कि.मी.)
2. राजस्थान (1070 कि.मी.)
3. गुजरात (512 कि.मी.)

केंद्र शासित प्रदेश

1. जम्मू-कश्मीर (1216 कि.मी. लद्दाख व J&K दोनों)
2. लद्दाख

रेडक्लिफ रेखा के साथ सर्वाधिक सीमा- ***राजस्थान*** (1070 कि.मी.)

रेडक्लिफ रेखा के साथ सबसे कम सीमा- गुजरात (512 कि.मी.)

रेडक्लिफ रेखा के सर्वाधिक नजदीक राजधानी मुख्यालय- ***श्रीनगर***

रेडक्लिफ रेखा के सर्वाधिक दुर राजधानी मुख्यालय- ***जयपुर***

रेडक्लिफ रेखा पर क्षेत्र में बड़ा राज्य- ***राजस्थान***

रेडक्लिफ रेखा पर क्षेत्र में सबसे छोटा राज्य- ***पंजाब***

- रेडक्लिफ रेखा के साथ राजस्थान की कुल सीमा ***1070 कि.मी.*** है। जो ***राजस्थान के पांच जिलों*** से लगती है।

1. श्रीगंगानगर
2. अनूपगढ़
3. बीकानेर.
4. जैसलमेर- 464 कि.मी.
5. बाड़मेर- 228 कि.मी.

- रेडक्लिफ रेखा राज्य में उत्तर में श्रीगंगानगर के ***हिन्दूमल कोट*** से लेकर दक्षिण - पश्चिम में बाड़मेर के बाखासर गाँव, सेडवा तहसील तक विस्तृत है।
- रेडक्लिफ रेखा पर पाकिस्तान के 9 जिले पंजाब प्रान्त का बहावलपुर, बहावल नगर व रहीमयारखान तथा सिंध प्रान्त के घोटकी, सुक्कुर, खैरपुर, संघर, उमरकोट व थारपाकर राजस्थान से सीमा बनाती है।

राजस्थान के साथ सर्वाधिक सीमा – ***बहावलपुर***

राजस्थान के साथ न्यूनतम सीमा- ***खैरपुर***

पाकिस्तान के दो प्रांत राजस्थान की सीमा को छूते हैं।

1. पंजाब प्रांत
2. सिंध प्रांत

- रेडक्लिफ रेखा एक कृत्रिम रेखा है।
- राजस्थान की रेडक्लिफ रेखा से सर्वाधिक सीमा जैसलमेर (464 कि.मी.) की लगती है।
- रेडक्लिफ के नजदीक जिला मुख्यालय –अनूपगढ़
- रेडक्लिफ के सर्वाधिक दूर जिला मुख्यालय - बीकानेर
- रेडक्लिफ रेखा पर सबसे बड़ा जिला - जैसलमेर
- रेडक्लिफ रेखा पर सबसे छोटा जिला - ***श्रीगंगानगर***

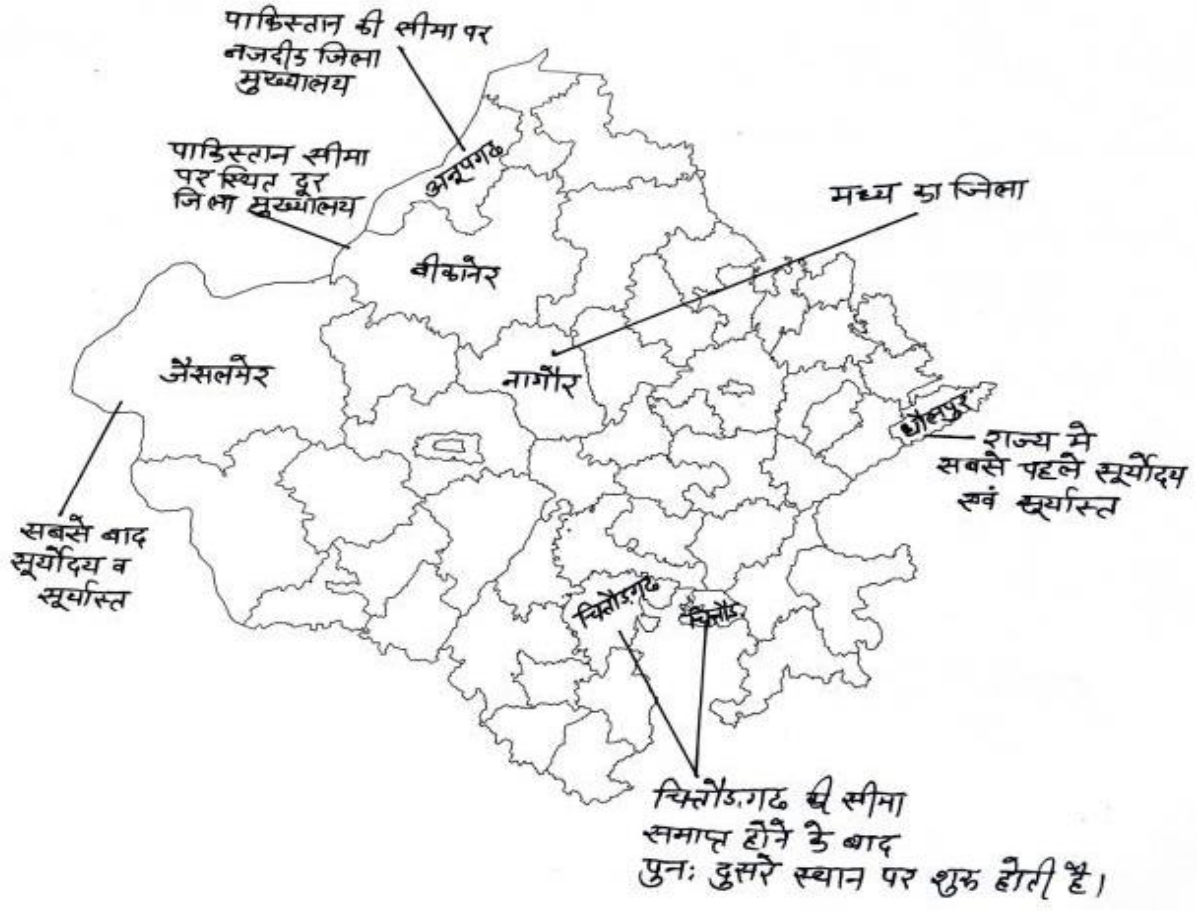

- **प्रतापगढ़ को प्राचीन काल में कांठल व देवला / देवलीया के नाम से** जाना जाता था।
  राजस्थान के दो जिले खण्डित जिले हैं - 1. अजमेर - टॉडगढ़ 2. चित्तौड़गढ़ - रावतभाटा
  राजस्थान में 7 अगस्त 2023 को **रामलुभाया समिति** के सुझावों मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने 19 और नए जिलें बनानें की घोषणा की। इसके साथ ही राजस्थान में जिलों की संख्या 33 से बढ़कर 50 हो गयी तथा 3 नये संभाग बनाये गए जिससे संभागों की संख्या 7 से बढ़कर 10 हो गयी।
- नये जिलों के गठन के लिए 5 अगस्त 2023 को अधिसूचना जारी की गयी।
- 6 अगस्त 2023 को अधिसूचना का गजट में प्रकाशन हुआ।
- 7 अगस्त 2023 से अधिसूचना प्रभावी हुई।
- **3 नए संभाग इस प्रकार हैं-**
- बांसवाड़ा, पाली व सीकर
- **19 नए जिले निम्नलिखित हैं-**
- अनूपगढ़, बालोतरा, ब्यावर, डीग, डीडवाना-कुचामन, दूदू, गंगापुर सिटी, जयपुर, जयपुर ग्रामीण, जोधपुर, जोधपुर ग्रामीण, फलौदी, केकड़ी, कोटपूतली-बहरोड, खैरथल, नीमकाथाना, सलूंबर, सांचौर और शाहपुरा

अनूपगढ़

- श्रीगंगानगर एवं बीकानेर जिलों का पुनर्गठन कर नया जिला अनूपगढ़ गठित किया गया है।
- इसमें 7 तहसील (अनूपगढ, रायसिंहनगर, श्रीविजयनगर, घड़साना, रावला, छत्तरगढ़, खाजूवाला) हैं।
- छत्तरगढ़ और खाजूवाला को बीकानेर से जोड़ा गया है, अन्य को श्रीगंगानगर से जोड़ा गया है।

बालोतरा

- बाड़मेर जिले का पुनर्गठन कर नया जिला बालोतरा गठित किया गया है।
- इस जिले में 7 तहसील (पचपदरा, कल्याणपुर, सिवाना, समदड़ी, बायतु, गिड़ा, सिणधरी) हैं।

डीडवाना-कुचामन

- नागौर जिले का पुनर्गठन कर नया जिला डीडवाना-कुचामन गठित किया गया है।
- इस जिले में 8 तहसील (डीडवाना, मौलासर, छोटी खाटू, लाडनूं, परबतसर, मकराना, नावां, कुचामनसिटी) हैं।

डीग

- भरतपुर जिले का पुनर्गठन कर नया जिला डीग गठित किया गया है।
- इस जिले में 9 तहसील (डीग, जनूथर, कुम्हेर, रारह, नगर, सीकरी, कामां, नुरहरा, पहाड़ी) हैं।

फलौदी

- जोधपुर जिले का पुनर्गठन कर नया जिला फलौदी गठित किया गया है।
- इस जिले में 8 तहसील (फलौदी, लोहावट, आऊ, दैचू, सेतरावा, बाप, घंटियाली, बापिणी) हैं।

जोधपुर (ग्रामीण)

- जोधपुर जिले का पुनर्गठन कर जोधपुर (ग्रामीण) जिला गठित किया जाता है।
- जोधपुर (ग्रामीण) जिले में 15 तहसील (जोधपुर उत्तर तहसील (जोधपुर का नगर निगम जोधपुर के अन्तर्गत आने वाले भाग को छोडकर शेष समस्त भाग), जोधपुर दक्षिण तहसील (जोधपुर का नगर निगम जोधपुर के अन्तर्गत आने वाले भाग को छोडकर शेष समस्त भाग) कुडी भक्तासनी, लूणी, झंवर, बिलाडा, भोपालगढ, पीपाड़सिटी, ओसियाँ, तिवरी, बावडी, शेरगढ, बालेसर, सेखला व चामू) हैं।

जोधपुर

- जोधपुर जिले का पुनर्गठन कर जोधपुर जिला गठित किया गया है।
- इस जिले में 2 तहसील जोधपुर उत्तर (जोधपुर तहसील का नगर निगम जोधपुर के अन्तर्गत आने वाला समस्त भाग), जोधपुर दक्षिण (जोधपुर तहसील का नगर निगम जोधपुर के अन्तर्गत आने वाला समस्त भाग) हैं।

गंगापुरसिटी

- **जिला मुख्यालय** - गंगापुरसिटी
- सवाईमाधोपुर एवं करौली जिलों का पुनर्गठन कर नया जिला गंगापुरसिटी गठित किया गया है।
- इस जिले में 7 तहसील (गंगापुरसिटी, तलावड़ा, वजीरपुर, बामनवास, बरनाला, टोडाभीम, नादोती हैं।
- टोडाभीम और नादोती तहसील को करौली से जोड़ा गया है। अन्य सभी को सवाईमाधोपुर से जोड़ा गया है।

दूदू

- **जिला मुख्यालय** - दूदू
- जयपुर जिले का पुनर्गठन कर नया जिला दूदू गठित किया गया।
- इस जिले में 3 तहसील (मौजमाबाद, दूदू, फागी) हैं।

जयपुर (ग्रामीण)

जिला मुख्यालय - जयपुर

जयपुर जिले का पुनर्गठन कर जयपुर (ग्रामीण) जिला गठित किया गया है।

जयपुर ग्रामीण जिले में 18 तहसील (जयपुर तहसील (जयपुर का नगर निगम जयपुर (हेरीटेज) एवं नगर निगम जयपुर (ग्रेटर) के अन्तर्गत आने वाले भाग को छोडकर शेष समस्त भाग) तहसील कालवाड़ का नगर निगम जयपुर (ग्रेटर) के अन्तर्गत आने वाले भाग को छोड़कर शेष समस्त भाग, तहसील सांगानेर का नगर निगम जयपुर (ग्रेटर) के अन्तर्गत आने वाले भाग को छोडकर शेष समस्त भाग, तहसील आमेर का नगर निगम जयपुर (हेरीटेज) के अन्तर्गत आने वाले भाग को छोडकर शेष समस्त भाग, जालसू, बस्सी, तुंगा, चाकसू, कोटखावदा, जमवारामगढ, आंधी, चौमू, फुलेरा (मु.-

अध्याय – 2

भौतिक प्रदेश

नोटः- भौगोलिक रूप से राजस्थान को चार भौतिक प्रदेशों में बाँटा गया है-

1. **पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश** – वह क्षेत्र जहाँ पर रेगिस्तान पाया जाता है।
2. **अरावली पर्वतमाला** - वह क्षेत्र जहाँ पर अरावली पर्वतमाला का विस्तार है।
3. **पूर्वी मैदानी प्रदेश**- वह क्षेत्र जहाँ पर अधिकांश दोमट व जलोढ़ मिट्टी पाई जाती है।
4. **दक्षिणी - पूर्वी पठारी प्रदेश** - वह क्षेत्र जहाँ पर अधिकांश मात्रा में काली मिट्टी पाई जाती है, इस क्षेत्र को हाड़ौती का पठार भी कहते है।

इन चारों प्रदेशों का विस्तृत वर्णन इस प्रकार है-

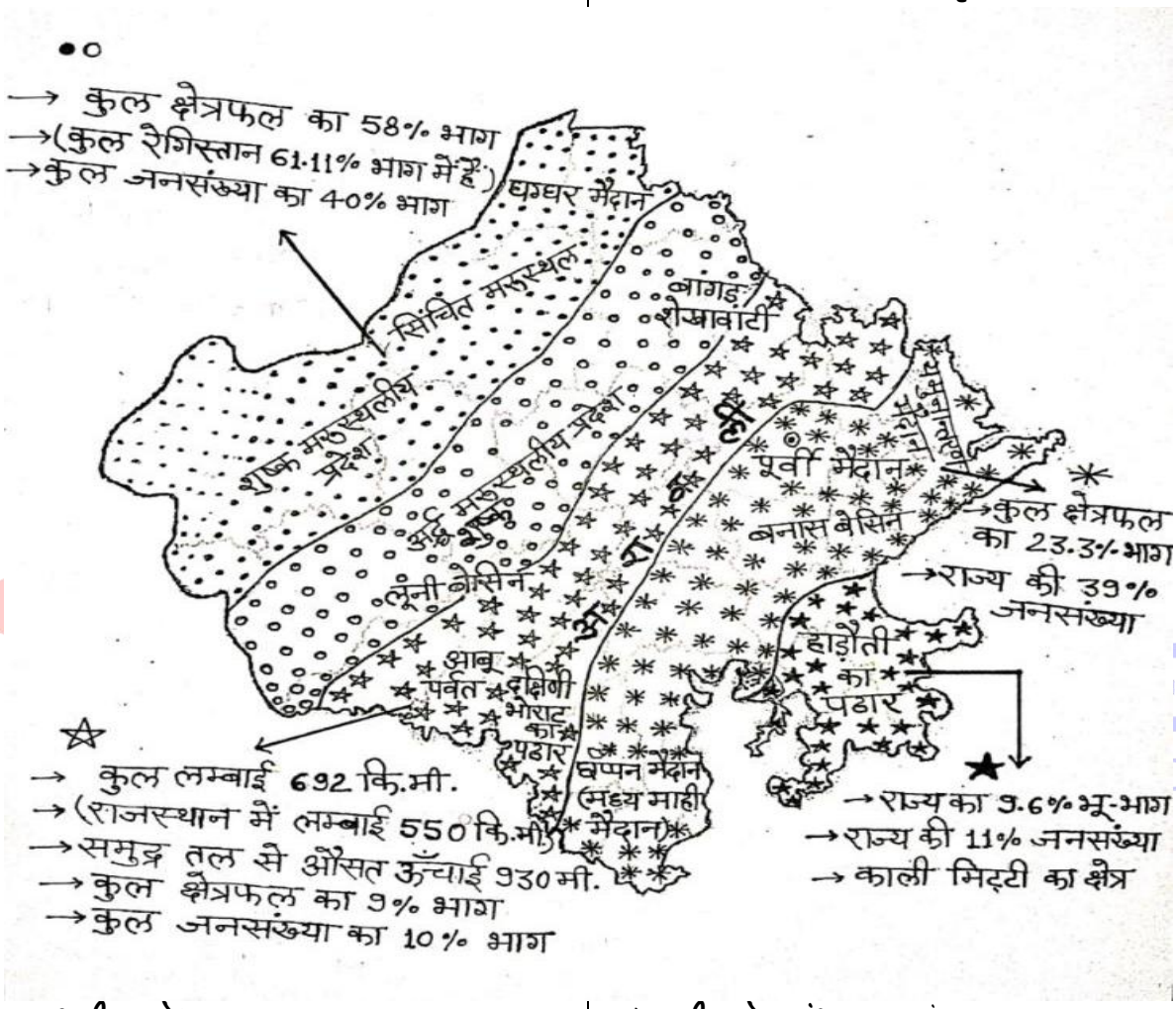

पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेशः-

- जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है कि राजस्थान का पश्चिमी मरुस्थलीय क्षेत्र टेथिस सागर का अवशेष है, और अरावली क्षेत्र गोंडवाना लैंड का हिस्सा है।

पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश का सामान्य परिचय :-

वर्तमान में रेगिस्तान का विस्तार राज्य के कुल 61.11 प्रतिशत हिस्से पर है।

नोटः- पहले ये क्षेत्र केवल 58 प्रतिशत भाग पर ही सीमित था, लेकिन वर्तमान में अरावली पर्वतमाला के कटी – फटी होने के कारण मरुस्थल का विस्तार पश्चिम से पूर्व की ओर बढ़ रहा है।

अरावली पर्वतमाला के पश्चिम में कुल 21 जिले स्थित हैं, उनमें से **20 जिलों में रेगिस्तान का विस्तार** है । यह जिले निम्न प्रकार है-

1. **बीकानेर संभाग** – गंगानगर, हनुमानगढ़, अनूपगढ़, बीकानेर
2. **जोधपुर संभाग** – जोधपुर, जोधपुर ग्रामीण, बालोतरा, फलौदी, जैसलमेर, बाड़मेर
3. **सीकर संभाग** – झुंझुनू, सीकर, चुरु, नीमकाथाना
4. **अजमेर संभाग** – नागौर, ब्यावर, डीडवाना, कुचामन
5. **पाली संभाग** – पाली, जालौर, सांचौर, सिरोही (अपवाद)

नोटः – राज्य के सि**रोही जिले में मरुस्थल का विस्तार नहीं है** अर्थात् अरावली के पश्चिम में स्थित **21 जिलों में से सिरोही एक मात्र ऐसा** जिला है, जो मरुस्थलीय जिलों की श्रेणी में शामिल नहीं है।

- **थार का रेगिस्तान** राजस्थान के उत्तर-पश्चिम भाग और पाकिस्तान में सिंध तथा पंजाब तक फैला है।
- यह **उत्तर – पश्चिम में 644 किमी० लम्बा और 360 किमी० चौड़ा है** ।

- इस का सामान्य ढ़ाल **उत्तर – पूर्व से दक्षिण – पश्चिम** की ओर है ।
- मरूस्थल का **ऊँचा उठा हुआ उत्तर -पूर्वी भाग 'थली' तथा दक्षिण-पश्चिम भाग नीचे का 'तली** 'कहलाता है।
  इस मरूस्थलीय क्षेत्र में राज्य की कुल **जनसंख्या का लगभग 40** प्रतिशत हिस्सा निवास करता है।
  यह **विश्व का सबसे अधिक जनसंख्या वाला मरूस्थल** है तथा इसके अलावा यह विश्व में सर्वाधिक जैव विविधता वाला मरूस्थल भी है।
- थार के मरूस्थल की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ है, कि यह **विश्व का एक मात्र** ऐसा मरूस्थल है, जिसके निर्माण में **दक्षिण पश्चिम मानसूनी हवाओं का मुख्य योगदान** है।
- थार का मरूस्थल भारतीय उपमहाद्वीप में ऋतु चक्र को भी नियंत्रित करता है ।
- ग्रीष्म काल में तेज गर्मी के कारण इस प्रदेश में न्यून वायु दाब केन्द्र विकसित हो जाता है। जो दक्षिण - पश्चिमी मानसूनी हवाओं को आकर्षित करता है। यह हवायें सम्पूर्ण प्रायद्वीप में वर्षा करती है ।
- भारतीय उपमहाद्वीप में मानसून को आकर्षित करने में इस मरूस्थल की उपस्थिति अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।
  इस क्षेत्र में शुष्क एवं अत्यंत विषम जलवायु पाई जाती है और तापमान गर्मियों में अत्यधिक (49° C तक) तथा सर्दियों में न्यूनतम (3° C तक) रहता है।
  आँकल जीवाश्म पार्क, जलोद्भिद तलछट व लिग्नाइट, खनिज तेल इत्यादि से इस तथ्य की पुष्ठि होती है, कि **थार का मरूस्थल 'पर्माकार्बोनिफेरस युग'** में टेथिस सागर का हिस्सा था।
  नोटः-मरूस्थलीकरण का मूल कारण :-
  मरूस्थलीकरण की समस्या सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त है। विश्व की कुल जनसंख्या का छठवाँ हिस्सा मरूस्थलीकरण की समस्या से प्रभावित है।
  सन् 1952 में"Symposia on Indian Desert" का आयोजन किया गया जिसमें थार के मरूस्थल की उत्पत्ति पूर्व में इसका विस्तार आदि पर विस्तृत चर्चा की गई है।

<u>क्या होता है मरूस्थलीकरण?</u>

- उपजाऊ एवं अमरूस्थलीय भूमि का क्रमिक रूप शुष्क प्रदेश अथवा मरूस्थल में परिवर्तित हो जाने की प्रक्रिया ही मरूस्थलीकरण है ।
- मरूस्थलीकरण प्रकृति की परिघटना है जो **जलवायवीय परिवर्तन व दोष पूर्ण भूमि उपयोग के कारण होती है।**
- यह क्रम वृद्धि परिघटना है , जिसमें मानव द्वारा भूमि उपयोग पर दबाव के कारण परिवर्तन होने से परितंत्र का अवनयन होता है।

मरूस्थलीकरण का सबसे महत्त्वपूर्ण कारण-

- भूमि का अविवेकी उपयोग
- पशुचारण
- निरंतर वर्षा में कमी
- संसाधनों का अति दोहन
- जनसंख्या वृद्धि इत्यादि।

थार का मरूस्थल 'ग्रेट पेलियो आर्कटिक अफ्रीका' मरूस्थल का ही पूर्वी भाग है।

थार के मरूस्थल में स्थित प्रमुख उद्यान 'राष्ट्रीय मरू उद्यान' है।

मरूभूमि राष्ट्रीय उद्यान

राज्य का मरुस्थल उष्ण मरुस्थल की श्रेणी में आता है । इस क्षेत्र की प्रमुख फसलें बाजरा, मोठ, ग्वार, इत्यादि है तथा **प्रमुख नदी 'लूनी'** है तथा प्रमुख नहर 'इंदिरा गाँधी 'नहर हैं

इस क्षेत्र में तीन प्रकार का मरूस्थल पाया जाता है'
1. इर्ग 2. हम्मादा 3. रैंग'

- **रेतीले मरूस्थल को 'इर्ग' कहा जाता है।**
- **पथरीले मरूस्थल को हम्मादा** कहा जाता है इसका विस्तार जैसलमेर, जोधपुर, बाड़मेर व जालौर तक है।
- ऐसा मरूस्थल जि**समें रेत व पत्थर दोनों पाए जाते है,** अर्थात् **मिश्रित मरूस्थल को ' रैंग' कहा जाता है।** यह जैसलमेर के निकट रामगढ़ व लोद्रवा क्षेत्रों में पाया जाता है।

प्रसिद्ध जन्तु वैज्ञानिक डॉ. **ईश्वर प्रकाश** ने कहा है कि राजस्थान के रेगिस्तानी क्षेत्र को मरू क्षेत्र नहीं कहकर **'रक्ष क्षेत्र'** कहा जाए क्योंकि यहाँ पर पर्याप्त मात्रा में **जैव विविधता** पाई जाती है।

नोटः- जोधपुर राज्य का एकमात्र ऐसा जिला है जिसमें **सभी प्रकार के बालूका स्तूप** पाये जाते हैं। **तथा सर्वाधिक बालूका स्तूप जैसलमेर जिले में पाए जाते हैं।**

<u>शुष्क मरूस्थल</u>

उत्तर - पश्चिम मरूस्थल का वह क्षेत्र जहाँ वनस्पति नगण्य या नाम मात्र की पाई जाती है, तथा वर्षा बहुत ही कम मात्रा में होती है। इस क्षेत्र में **वर्षा 0 से 25 से.मी.** तक होती है। इस क्षेत्र में **कांटेदार झाड़ियां** बहुतायात में पायी जाती है।

1. **बालूका स्तूप युक्त प्रदेश :-** उत्तर पश्चिम मरूस्थल का वह क्षेत्र जहाँ धोरे / टीले या टीबों का निर्माण होता है। यह राजस्थान के कुल मरुस्थल का 58.5 प्रतिशत है।
   बालूका स्तूप युक्त प्रदेश :- बालूका स्तूप युक्त प्रदेश के अन्तर्गत राज्य की अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर स्थित 5 जिले श्रीगंगानगर, बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, अनूपगढ़, तथा फलौदी, चुरू व पश्चिमी नागौर एवं जोधपुर जिला शामिल है।
2. **बालूका स्तूप मुक्त प्रदेश:-** उत्तर - पश्चिम मरूस्थल का वह क्षेत्र जहाँ धोरों का निर्माण नहीं होता है अर्थात् वह क्षेत्र जो चट्टानों से अच्छादित है बालूका स्तूप मुक्त प्रदेश है। यह राजस्थान के कुल मरुस्थल का 41.5 प्रतिशत भाग है ।

कोपेन का जलवायु का वर्गीकरण

- **1918 में डॉ. ब्लादिमिर कोपेन ने राजस्थान को चार जलवायु प्रदेशों में बाँटा है।** इन जलवायु प्रदेशों के **वर्गीकरण का मुख्य आधार वनस्पति था।**
- उनके अनुसार वनस्पति के द्वारा किसी स्थान पर वर्षा व तापमान के प्रभाव को ज्ञात किया जा सकता है। इन्होंने अपने वर्णन में कूट सांकेतिक शब्दों का उपयोग किया।

1. Aw / उष्ण कटिबंधीय आर्द्र जलवायु प्रदेश
2. BShw / अर्द्ध शुष्क / स्टेपी जलवायु प्रदेश
3. BWhw / उष्ण मरुस्थलीय / उष्ण कटिबंधीय शुष्क जलवायु प्रदेश
4. Cwg / शुष्क शीत / उप आर्द्र जलवायु प्रदेश

1. Aw / उष्ण कटिबंधीय आर्द्र जलवायु प्रदेश-

- **इस जलवायु प्रदेश के अंतर्गत बाँसवाड़ा व डूंगरपुर, सलूम्बर, बारां, प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़, झालावाड़, कोटा एवं सिरोही** जिले आते हैं।
- इस प्रदेश का **प्रतिनिधित्व बाँसवाड़ा जिला** करता है।
- इस जलवायु प्रदेश में ग्रीष्म ऋतु में भीषण गर्मी पड़ती है तथा वर्षा (औसत वर्षा 80 - 90 सेमी.) भी अधिकतम ग्रीष्म ऋतु में ही होती है। यहाँ का औसत तापमान - गर्मी में 30°-34° व सर्दी में 12°-15°C रहता है।
- सर्दी में शुष्क हवाएँ चलती है। यह क्षेत्र उष्ण कटिबंधीय घास के मैदानों तथा सवाना प्रदेशों से समानता रखते हैं।
- इस प्रदेश में लाल लोमी मध्यम काली मृदा पायी जाती है।
- **यहाँ पर मानसूनी जलवायु प्रदेश पतझड़ वन पाये जाते हैं।**

2. BShw / अर्द्ध शुष्क / स्टेपी जलवायु प्रदेश-

- इस प्रदेश में बाड़मेर, बालोतरा, जालौर, सांचौर, उत्तरी सिरोही पाली, ब्यावर, जोधपुर, जोधपुर ग्रामीण, नागौर, डीडवाना-कुचामन, चुरू, झुंझुनू, सीकर तथा नीम का थाना आदि जिले आते हैं।
- इस प्रदेश का **प्रतिनिधित्व नागौर जिला** करता है। इस जलवायु प्रदेश में सर्दी की ऋतु शुष्क होती है तथा गर्मी के मौसम में भी अधिक वर्षा (औसत वर्षा 20-40 सेमी.) नहीं होती है।
- यहाँ का औसत तापमान में गर्मी 32°-35° व सर्दी में 10°-15°C रहता है। यहाँ स्टेपी प्रकार की वनस्पति पाई जाती है। **काँटेदार झाड़ियाँ व घास के मैदान यहाँ की विशेषता है।**
- **यहाँ एरिडीसोल प्रकार की मृदा पायी जाती है।**

3. BWhw / उष्ण मरुस्थलीय / उष्ण कटिबंधीय शुष्क-

- **इस प्रदेश में गंगानगर, हनुमानगढ़, अनूपगढ़, पश्चिमी चुरू, पश्चिमी बीकानेर, जैसलमेर तथा फलौदी आदि जिले आते हैं।**
- इस प्रदेश का **प्रतिनिधित्व बीकानेर जिला** करता है।
- इस प्रदेश में शुष्क उष्ण मरुस्थलीय जलवायु की दशाएँ पाई जाती है जहाँ वर्षा (औसत वर्षा 10-20 सेमी.) कम होती है एवं वाष्पीकरण की प्रक्रिया अधिक होती है।
- तापमान - गर्मियों में 35 डिग्री तथा सर्दियों में 12 से 18 डिग्री सेंटीग्रेड।
- इस जलवायु प्रदेश में एंटीसोल मृदा तथा मरुद्भिद (जीरोफाइट) वनस्पति पायी जाती है।

4. Cwg / शुष्क शीत / उपआर्द्र जलवायु प्रदेश-

- इस प्रदेश के अन्तर्गत खैरथल-तिजारा, कोटपूतली-बहरोड़, जयपुर, जयपुर ग्रामीण, दूदू, अलवर, भरतपुर, डीग, दौसा, करौली, धौलपुर, सवाईमाधोपुर, गंगापुरसिटी, केकड़ी, ब्यावर, अजमेर, टोंक, शाहपुरा, राजसमन्द, भीलवाड़ा, बूंदी व कोटा आदि जिले आते हैं।
- इस प्रदेश का प्रतिनिधित्व टोंक जिला करता है।
- साधारणतः यहाँ वर्षा ऋतु में ही वर्षा (औसत वर्षा 60-80 सेमी.) होती है।
- यहाँ का औसत तापमान - गर्मी में 30°-35° व सर्दी में 13°-20°C रहता है। यहाँ बीहड़ पाये जाते हैं।
- यहाँ एल्फीसोल मृदा तथा मिश्रित पतझड़ वन (धोंकड़ा वन) पाए जाते हैं।
- **पहाड़, पठार वनस्पति विहीन हो गये हैं। नीम, बबूल, शीशम के पेड़ बहुत हैं।**

1953 में कोपेन के शिष्य गिगर पॉल ने इसमें संशोधन करते हुए अंतिम रूप दिया और तब से इसे कोपेन - गिगर पॉल वर्गीकरण के नाम से जाना गया। इन्होंने जलवायु के वर्गीकरण में अंग्रेजी के छोटे-बड़े वर्णों का प्रयोग किया, जो निम्न प्रकार हैं-

A. तात्पर्य - अति आर्द्र जलवायु
B. तात्पर्य - बालू/रेत - शुष्क जलवायु
C. तात्पर्य - शीतोष्ण जलवायु
D. तात्पर्य – अल्प तापीय जलवायु
E. तात्पर्य - ध्रुवीय जलवायु

- राजस्थान में D व E प्रकार की जलवायु नहीं पायी जाती है।
- A व C जलवायु के वर्गीकरण का आधार तापमान, जबकि B जलवायु के वर्गीकरण का आधार वर्षा है।

h - तात्पर्य - hot (गर्म)
W - तात्पर्य - warm (गर्म)

s-तात्पर्य-स्टेपी → आधा गीला / आधा सूखा → अर्द्धशुष्क

g - तात्पर्य - गर्मी - वर्षा से

- S व W का प्रयोग B जलवायु के साथ होता है तथा का प्रयोग B जलवायु के साथ होता है।

कोपेन के अनुसार राजस्थान के जलवायु प्रदेश निम्न मानचित्र से समझिये –

कालीसिल, मोरेल, डाई, सोहादरा आदि नदियाँ शामिल होती हैं।

2. **अपवाह के आधार पर वर्गीकरण** - प्रिय छात्रों नदियों के विभाजन का सबसे अच्छा तरीका है और इसी आधार पर नदियों को तीन भागों में बाँटा गया है

(अ) बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियाँ

इस अपवाह तंत्र में प्रमुख नदियाँ शामिल होती है। जैसे **चंबल, बनास, कालीसिंध, पार्वती, बाणगंगा, खारी, बेड़च, गंभीरी, मेनाल, कोठारी, आहू, कालीसिंध तथा परवन आदि।** ये नदियाँ अरावली के पूर्व में बहती हैं इनमें कुछ नदियों का उद्गम स्थल अरावली का पूर्वी घाट तथा कुछ का मध्यप्रदेश का विंध्याचल पर्वत है। यह सभी नदियाँ अपना जल यमुना नदी के माध्यम से बंगाल की खाड़ी में ले जाती हैं।

(ब) अरब सागर में गिरने वाली नदियाँ -

इस अपवाह तंत्र में शामिल प्रमुख नदियाँ हैं। जैसे **माही, सोम, जाखम, साबरमती, पश्चिमी बनास, लूणी, जोजड़ी, बांडी, सूकड़ी इत्यादि। पश्चिमी बनास, लूनी गुजरात के कच्छ के रण में विलुप्त हो जाती हैं,** ये सभी नदियाँ अरब सागर की ओर अपना जल लेकर जाती हैं।

(स) अंतः प्रवाह वाली नदियाँ -

बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियाँ और अरब सागर में गिरने वाली नदियों के अलावा कुछ छोटी नदियाँ भी हैं जो कुछ दूरी तक प्रभावी होकर राज्य में अपने क्षेत्र में विलुप्त हो जाती हैं तथा उनका जल समुद्र तक नहीं जा पाता है, इसलिए इन्हें आंतरिक प्रवाह वाली नदियाँ कहा जाता है, जैसे :- **काकनी, कांतली, साबी, घग्घर, मेंथा, बांडी, रूपनगढ़ इत्यादि।**

राजस्थान राज्य की नदियों से संबंधित महत्त्वपूर्ण तथ्य जो की परीक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं -

राजस्थान की अधिकांश नदियों का प्रवाह क्षेत्र अरावली पर्वत की पूर्व में है।

- **राजस्थान में चंबल तथा माही के अलावा अन्य कोई नदी बारह मासी नहीं है।**
- **राज्य में चूरू, बीकानेर व फलौदी तीन ऐसे जिले हैं जहाँ कोई नदी नहीं है।**
- श्रीगंगानगर में पृथक् से कोई नदी नहीं है लेकिन वर्षा होने पर घग्घर नदी का बाढ़ का पानी सूरतगढ़, अनूपगढ़ तक चला जाता है।
- राज्य के 60% भू-भाग पर आंतरिक जल प्रवाह का विस्तार है।
- राज्य में सबसे अधिक सतही जल चंबल नदी में उपलब्ध है।
- **राज्य में बनास नदी का जल ग्रहण क्षेत्र सबसे बड़ा है।**
- **राज्य में सर्वाधिक नदियाँ कोटा संभाग में** बहती हैं।
- **राज्य की सबसे बड़ी नदी चंबल है।**
- पश्चिमी राजस्थान की जीवन रेखा इंदिरा गांधी नहर परियोजना को कहते हैं।
- मारवाड़ की जीवन रेखा लूनी नदी को कहते हैं।
- बीकानेर की जीवन रेखा कंवर सेन लिफ्ट परियोजना को कहते हैं।
- राजसमंद की जीवन रेखा नंद समंद झील कहलाती है।
- भरतपुर की जीवन रेखा मोती झील है।
- गुजरात की जीवन रेखा नर्मदा परियोजना है।
- जमशेदपुर की जीवन रेखा स्वर्ण रेखा नदी को कहा जाता है। इस नदी पर हुंडरू जल प्रपात स्थित है।
- आदिवासियों की या दक्षिणी राजस्थान की जीवन रेखा माही नदी को कहा जाता है।
- पूरे राज्य में बहने वाली सबसे बड़ी नदी बनास है।
- भारत सरकार द्वारा राजस्थान भूमिगत जल बोर्ड की स्थापना 1955 में की गई थी। इस बोर्ड का नियंत्रण राजस्थान सरकार को सौंपा गया था। 1971 से इस बोर्ड को भूजल विभाग के नाम से जाना जाता है इसका कार्यालय जोधपुर में है।
- पूर्णत : राजस्थान में बहने वाली सबसे लंबी नदी तथा सर्वाधिक जल ग्रहण क्षेत्र वाली नदी बनास है।
- चंबल नदी पर भैंसरोड़गढ़ (चित्तौड़गढ़) के निकट चूलिया जल प्रपात तथा मांगली नदी पर बूंदी में "भीमलत प्रपात" है।
- **अंतर्राज्य सीमा बनाने वाली एक मात्र नदी है चंबल,** जो कि राजस्थान व मध्यप्रदेश की सीमा बनाती है।
- टोंक जिले की राजमहल नामक जगह पर बनास नदी, डाई नदी तथा खारी नदी के द्वारा त्रिवेणी संगम बनाया जाता है। यहाँ शिव एवं सूर्य की संयुक्त प्रतिमा स्थित है, जो मार्तंड भैरव मंदिर या देवनारायण मंदिर के नाम से जाना जाता है यहाँ नारायण सागर बाँध स्थित है।

प्रिय छात्रों अब हम प्रत्येक अपवाह तंत्र को विस्तृत रूप से समझते हैं। सबसे पहले हम बंगाल की खाड़ी की ओर चले जाने वाली नदियों का अध्ययन करेंगे-

1. **चंबल नदी** –प्रिय छात्रों चंबल नदी के बारे में हम समझते हैं कि क्या है इसकी महत्त्वपूर्ण विशेषताएं

- चंबल नदी राजस्थान की एक मात्र ऐसी नदी है जो प्राकृतिक अंतर्राज्य सीमा (राजस्थान, मध्यप्रदेश) निर्धारित करती है। इस नदी को अन्य नामों से भी जाना जाता है इसके अन्य नाम है चर्मणवती नदी, कामधेनु नदी, बारह मासी नदी, नित्य वाहिनी नदी।
- इस नदी की **कुल लंबाई लगभग 1051 किलो मीटर है। यह नदी मध्यप्रदेश, राजस्थान व उत्तरप्रदेश अर्थात् 3 राज्यों में बहती है** यह नदी मध्यप्रदेश में लगभग 320 किलो मीटर, राजस्थान में लगभग 322 किलो मीटर, उत्तरप्रदेश में लगभग 157 किलो मीटर बहती है तथा मध्यप्रदेश, राजस्थान व उत्तरप्रदेश के मध्य 252 किमी लम्बी अंतरराज्यीय सीमा बनाती है।

चम्बल एवं इसकी सहायक नदियाँ

- *इस नदी का **उद्गम स्थल मध्यप्रदेश के महु के निकट विंध्याचल पर्वतमाला** में स्थित 616 मीटर ऊंची "जानापाव की पहाड़ी" से होता है।*
- *मध्यप्रदेश में मंदसौर जिला में स्थित रामपुरा भानपुरा के पठारों में स्थित इस नदी का सबसे बड़ा बाँध **"गांधी सागर बाँध"** बना हुआ है।*
- *यह नदी राजस्थान में सर्वप्रथम चित्तौड़गढ़ जिले में स्थित चौरासीगढ़ नामक स्थान से प्रवेश करती है।*
- *इस नदी पर भैंसरोड़गढ़ के समीप सबसे बड़ा सबसे ऊंचा जल प्रपात बना है जिसे चूलिया जल प्रपात के नाम से जानते हैं।*
- *चंबल नदी पर चित्तौड़गढ़ जिले के रावतभाटा नामक स्थान राणाप्रताप सागर बाँध बना हुआ है जो कि जल भराव की क्षमता से राज्य का सबसे बड़ा बाँध है। इस बाँध का 113 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है।*
- *चंबल नदी चित्तौड़गढ़ जिले में बहने के बाद कोटा जिले में प्रवेश करती है।*
- ***कोटा जिले में इस नदी पर जवाहर सागर व कोटा बैराज बाँध** बना हुआ है कोटा बैराज बाँध जल विद्युत उत्पादन के लिए उपयोग में नहीं लिया जाता।*
- *कोटा जिले के नौनेरा नामक स्थान पर "कालीसिंध नदी" चंबल में आकर मिल जाती है*
- *यह स्थान प्राचीन काल में कपिल मुनि की तपस्या स्थली रहा था।*
- *कोटा तथा बूंदी जिले की सीमा निर्धारित करती हुई यह नदी बूंदी जिले में प्रवेश करती है।*
- *बूंदी जिले की केशवरायपाटन नामक स्थान पर इस नदी का सर्वाधिक गहरा पाट है जो 113 मीटर की गहराई तक है।*
- *बूंदी जिले से आगे चल कर यह नदी कोटा तथा सवाई माधोपुर की सीमा निर्धारित करती है।*
- *सवाईमाधोपुर जिले के खण्डार तहसील के रामेश्वर नामक स्थान पर बनास तथा सीप नदी चंबल में आकर मिलती है तथा यहाँ त्रिवेणी संगम बनाते हैं।*
- *सवाई माधोपुर जिले के पालीया नामक स्थान पर चंबल नदी की सहायक नदी पार्वती इसमें आकर मिलती है।*
- *धौलपुर जिले के पीलहाट होते हुए यह नदी राजस्थान से बाहर निकलती है और उत्तरप्रदेश राज्य में प्रवेश कर जाती है।*
- *अंत में यह नदी उत्तरप्रदेश राज्य के इटावा जिले के मुरादगंज कस्बे में 275 किलो मीटर बहने के बाद यमुना में मिल जाती है यह यमुना की सबसे बड़ी सहायक नदी है।*

चंबल नदी से संबंधित अन्य तथ्य -

- *चंबल नदी राज्य के कुल अपवाह क्षेत्र का 20.90% भाग में है। यह नदी **"गांगेय सूस"** नामक स्तन पायी जीव के लिए प्रसिद्ध है।*
- ***चंबल यूनेस्को की विश्व धरोहर के लिए नामित राज्य की एकमात्र नदी है व बहाव की क्षमता की दृष्टि से राज्य की सबसे लंबी नदी** चंबल ही है।*
- *यह सर्वाधिक सतही जल वाली नदी है इसीलिए इसे **"वाटर सफारी नदी"** भी कहा जाता है।*

- चंबल नदी से सर्वाधिक अवनालिका अपरदन कोटा जिले में होता है।
- **चंबल नदी राज्य के चित्तौड़गढ़, कोटा, बूंदी, सवाई माधोपुर, करौली और धौलपुर जिले में बहती है ।**
- यह विश्व की एकमात्र ऐसी नदी है जिस पर प्रत्येक 100 किलो मीटर की दूरी पर 3 बड़े बाँध बने हुए हैं और तीनों ही बाँध से जल विद्युत उत्पादन होता है।
- चंबल नदी में घड़ियाल सर्वाधिक मात्रा में पाए जाते हैं इस कारण चंबल नदी को **घड़ियालों कि जन्मस्थली** कहा जाता है।

चंबल की सहायक नदियाँ -

- **मध्यप्रदेश में मिलने वाली नदियाँ - सीवान, रेतम, शिप्रा।**
- **राजस्थान में मिलने वाली नदियाँ - आलनिया, परवन, बनास, कालीसिंध, पार्वती, बामनी, कुराल, छोटी कालीसिंध आदि ।**

शोर्ट ट्रिक

चम्बल नदी की सहायक नदियों के नाम:-

"बना काली बाम में कल पर्व चम्बल पर"

सूत्र		**नदियाँ**
बना	-	बनास
काली	-	कालीसिंध
बाम	-	बामनी
मे	-	मेज
कल	-	कुराल
पर्व	-	पार्वती

चंबल नदी पर चार बाँध बनाए गए हैं -

गाँधी सागर बाँध	-	मध्यप्रदेश की भानपुरा तहसील में
राणाप्रताप सागर बाँध	-	रावतभाटा (चित्तौड़गढ़)
जवाहर सागर बाँध	-	बोरा बास, कोटा
कोटा बैराज बाँध	-	कोटा

2. <u>बनास नदी -</u>

<u>बनास नदी एवं उसकी सहायक नदियाँ</u>

- **बनास नदी का उद्गम राजसमंद जिले में स्थित खमनोर की पहाड़ियाँ से होता है** पूर्णत: प्रवाह के आधार पर यह राजस्थान की सबसे लंबी नदी है इसकी कुल लंबाई लगभग 512 किलो मीटर है।
- इस नदी को वन की आशा, वर्णाशा, वनआशा, वशिष्ठ आदि नामों से जाना जाता है ।
- यह नदी 8 जिलों में बहती हैं यह 8 जिले क्रम से हैं राजसमंद, चित्तौड़गढ़, भीलवाड़ा, अजमेर, टोंक, सवाई माधोपुर, केकड़ी, शाहपुरा ।
- इस नदी के प्रवाह क्षेत्र में भूरी मिट्टी के प्रसार पाया जाता है।

की चाकसू तहसील से निकलती है और चतरपुरा के निकट मानसी में मिल जाती है।

रेवा नदी :-

- यह नदी मध्यप्रदेश राज्य के भानपुरा तहसील की पहाड़ियों से निकलती है और पश्चिम में प्रवाहित होती हुई बुद्ध नगर के निकट झालावाड़ जिले के पचपहाड़ तहसील में प्रवेश करती है।
- अंत में यह नदी भीलवाड़ा गाँव के निकट आहू से मिल जाती है।

गुंजाली :-

- यह एक सहायक नदी है जो चंबल में मिल जाती है।
- इसका उद्गम मध्यप्रदेश में जाट गाँव के पास से है।
- दौलतपुर गाँव के निकट के चित्तौड़गढ़ जिले में प्रवेश करती है और पूर्व की ओर बहती है।
- चित्तौड़गढ़ जिले में यह मोरेन, अमरगंज व कुआँखेड़ा गाँव से होकर निकलती है।
- अंततः अरनिया गाँव के पास यह **चंबल नदी में मिल** जाती है।

चंद्रभागा नदी :-

- यह छोटी नदी है जो सेमली नामक गाँव के निकट से निकलती है।
- इसके पश्चात् यह झालरापाटन तहसील में केवल 7 किलोमीटर तक प्रवाहित होती है और खंडियाँ गाँव के निकट कालीसिंध में मिल जाती है।
- कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर झालरापाटन कस्बे के निकट चंद्रावती नामक स्थान पर स्नान के लिए हजारों व्यक्ति एकत्रित होते हैं।

अरब सागर में गिरने वाली नदियाँ -

1. **लूनी नदी -**

- इस नदी का **उद्गम स्थल अजमेर जिले में स्थित नाग पहाड़ी है।**
- पुष्कर से गोविंदगढ़ (अजमेर) तक इसे साक्री के नाम से जाना जाता है।
- **अजमेर में इसे साबरमती, सागरमती, या सरस्वती कहा जाता है, आगे चल कर इसे लूनी नदी के नाम से जाना जाता है।**
- यह अरावली के पश्चिम में बहने वाली सबसे बड़ी नदी है। लूनी नदी मरुस्थल की सबसे लंबी नदी भी है।
- इसे अन्य नामों से भी जाना जाता है जैसे – **मारवाड़ की जीवनरेखा, मरुस्थल की गंगा,** आधी खारी आधी मीठी नदी, अंतः सलिला (जो कि कालिदास ने दिया था), **रेल या नीडा (सांचौर में जाना जाता है)।**
- राजस्थान में इसकी कुल लम्बाई लगभग 320 किलोमीटर है।
- **अपवाह क्षेत्र** – अजमेर, नागौर, ब्यावर, जोधपुर, बालोतरा, बाड़मेर, सांचौर आदि।
- इस नदी की कुल लंबाई लगभग 495 किलोमीटर है जो कि पूर्णतया बरसाती नदी है। इसका जल **बालोतरा तक मीठा तथा बाद में खारा हो जाता है** इसलिए इसे आधी मीठी आधी खारी नदी के नाम से जाना जाता है।
- इसकी **सहायक नदियाँ** निम्न प्रकार है - **सूकड़ी, जवाई, सगाई, लीलड़ी, जोजड़ी, मीठड़ी, सागी इत्यादि।**
- इसका अपवाह अजमेर, नागौर, ब्यावर, जोधपुर, बालोतरा, बाड़मेर और सांचौर जिले में है। सांचौर जिले में लूनी नदी के तेज प्रवाह के कारण इसे रेल या नीड़ा कहा जाता है।
- लूणी नदी के किनारे सरदारसमंद परियोजना है।
- हल्दीघाटी के युद्ध की योजना अकबर ने इसी नदी के तट पर बनाई थी।
- लूनी एवं बनास राज्य की ऐसी नदियाँ है जो अरावली पर्वतमाला को मध्य में से विभाजित करती है।
- **लूनी नदी से जोधपुर की जसवंत सागर बाँध को पानी की आपूर्ति होती है**
- लूनी नदी में दाईं ओर से केवल जोजड़ी नदी मिलती है इसका उद्गम नागौर के पोंडरु गाँव की पहाड़ियों से होता है।
- यह नदी अंत में सांचौर में बहकर गुजरात के कच्छ जिले में प्रवेश करती है और फिर **कच्छ के रण में विलुप्त हो जाती है।**
- बालोतरा जिला लूनी नदी के दाये किनारे स्थित है।

2. **माही नदी**

- **इस नदी को दक्षिण की गंगा, कांठल की गंगा वागड़ की गंगा, आदिवासियों की गंगा,** दक्षिण राजस्थान की जीवन रेखा या स्वर्ण रेखा आदिवासियों की जीवन रेखा कहा जाता है।
- **इस नदी का उद्गम विंध्याचल पर्वतमाला के मध्यप्रदेश के धार जिले के सरदारपुरा के निकट अमरशेरु की पहाड़ियों में स्थित "मेहद झील" से होता है।**
- यह राजस्थान में बाँसवाड़ा के खांदू नामक स्थान के पास प्रवेश करती है तथा बाँसवाड़ा – डूंगरपुर की सीमा बनाती हुई गुजरात में पंच महल जिले में रामपुर के पास प्रवेश करती है।
- **माही नदी पर कड़ाना बाँध स्थित** है। यह नदी आगे चल कर **खंभात की खाड़ी में गिरती है।**
- **इसके प्रवाह क्षेत्र को "छप्पन का मैदान"** भी कहा जाता है इस नदी की कुल लंबाई लगभग 576 किलोमीटर है तथा केवल राजस्थान में यह 171 किलोमीटर लंबी है।
- **डूंगरपुर जिले में बेणेश्वर के निकट माही नदी, सोम नदी एवं जाखम नदी का संगम है जिसे त्रिवेणी संगम कहा जाता है** इसी पर प्रतिवर्ष माघ पूर्णिमा को मेला लगता है जिसे आदिवासियों का कुंभ कहा जाता है इसी स्थान पर संत मावजी द्वारा स्थापित किया गया एक शिवलिंग है यह विश्व का एकमात्र खंडित शिवलिंग है जिसकी पूजा की जाती है।
- **इसकी सहायक नदियाँ सोम, जाखम, अनास, हरण, चाप, मोरेन है।**

अध्याय – 5

1857 की क्रांति में राजस्थान का योगदान

राजस्थान में 1857 की क्रांति का आरम्भ

- 1857 Revolution के समय भारत का गवर्नर जनरल " लार्ड केनिंग " था।
- जब AGG जॉर्ज पेट्रिक लॉरेंस को मेरठ में सैनिक क्रान्ति की सूचना मिली तब वह माउन्ट आबू में था।
- AGG को मेरठ में क्रान्ति की सूचना 19 मई 1857 को मिली।
- जॉर्ज पेट्रिक लॉरेंस ने अजमेर के मैंगजीन दुर्ग में तैनात 15 वीं नेटिव इन्फेन्ट्री (NI) को नसीराबाद भेज दिया।
- मैंगजीन दुर्ग में अंग्रेजो का शस्त्रागार तथा सरकारी खजाना रखा हुआ था।
- इस दुर्ग का नाम अकबर द्वारा रखा गया था।
- AGG ने देशी राजाओ को पत्र लिखकर 1817-1818 की सहायक सन्धियों का स्मरण कराया तथा क्रान्ति के दमन हेतु सहयोग माँगा।
- 1857 की क्रान्ति के समय राजपूताना उत्तर-पश्चिम सीमाप्रान्त के प्रशासनिक नियंत्रण में था।
- उत्तर-पश्चिम सीमाप्रान्त का मुख्यालय आगरा में था और इस प्रान्त का लेफ्टिनेंट गवर्नर कोलवीन था।

राजस्थान में क्रांति के समय 6 सैनिक छावनियां थी जिनमें से खेरवाड़ा (उदयपुर) और ब्यावर (वर्तमान ब्यावर जिला) सैनिकों ने विद्रोह में भाग नहीं लिया था।

सैनिक छावनियां

1. नसीराबाद (अजमेर)
2. नीमच (मध्य प्रदेश)
3. एरिनपुरा (शिवगंज तहसील सिरोही)
4. देवली (टोंक)
5. ब्यावर (ब्यावर)
6. खेरवाड़ा (उदयपुर)

NOTE – खेरवाड़ा व ब्यावर सैनिक छावनीयों ने इस सैनिक विद्रोह में भाग नहीं लिया।

नसीराबाद में क्रान्ति

- राजस्थान में 1857 की क्रांति का बिगुल नसीराबाद छावनी के सैनिको ने बजाया।
- यहाँ अजमेर से अचानक भेजी गई. 15 वीं नेटिव इन्फेंट्री के सेनिको में असन्तोष व्याप्त हो गया था।
- 30 वीं नेटिव इन्फेंट्री यहाँ पहले से ही तैनात थी।
- नसीराबाद छावनी के सैनिक रोटियों के आटे में हड्डी का चूरा मिला होने की अफवाह से भी उत्तेजित हो गये थे।
- 28 मई. 1857 को 15 वीं नेटिव इन्फेंट्री के सैनिको ने विद्रोह कर अपने अधिकारी प्रिचार्ड का आदेश मानने से इन्कार कर दिया।
- विद्रोही सैनिको ने छावनी में मौजूद अंग्रेजो के. वेनी, स्पोर्टिस वुड तथा न्यूबरी की हत्या कर दी और दिल्ली कूच कर गए।
- बख्तावर सिंह द्वारा यहाँ विद्रोहियों का नेतृत्व किया गया।
- लेफ्टिनेंट माल्टर, व लेफ्टिनेंट हेथकोट के नेतृत्व में मेवाड़ के सैनिको ने विद्रोहियों का पीछा किया लेकिन असफल रहे।

नीमच में क्रांति

- 2 जून 1857 को नीमच में कर्नल अबॉट ने हिन्दू व मुस्लिम सैनिको को अंग्रेजों के प्रति वफादारी के लिये गीता व कुरान की शपथ दिलाई ।
- अवध के एक सैनिक मोहम्मद अली बेग ने इसका विरोध किया ओर कर्नल अबॉट की हत्या कर दी।
- 3 जून 1857 को नीमच छावनी में क्रान्ति भड़क गई।
- यहाँ हीरालाल द्वारा नेतृत्व प्रदान किया गया।
- यहाँ मौजूद 40 अंग्रेजो ने भागकर डूंगला गाँव में रंगाराम किसान के यहाँ शरण ली।
- मेवाड़ के सैनिक इन्हें उदयपुर ले गये जहाँ महाराणा स्वरूप सिंह ने इन्हें जगमन्दिर पैलेस में ठहराया।
- राजस्थान में 1857 की क्रांति के दमन में अंग्रेजो का साथ देने वाला राजपूताने का पहला शासक मेवाड़ का स्वरूप सिंह था।
- नीमच के विद्रोही सैनिको ने आगरा पहुँच कर वहाँ जेल में बन्द कैदियों को मुक्त कर दिया। विद्रोहियों ने आगरा के सरकारी खजाने से एक लाख छब्बीस हजार रूपये लूट लिये।
- नीमच के सैनिको ने देवली छावनी होते हुए दिल्ली कूच किया।

एरिनपुरा में क्रान्ति

- राजस्थान में 1857 की क्रांति में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका एरियनपुरा छावनी के सैनिकों ने निभाई।
- 21 अगस्त 1857 को यहाँ के सैनिको ने विद्रोह कर दिया।
- यहाँ पर शिवसिंह, शीतल प्रसाद, मोती खां तथा तिलकराम ने सैनिको को नेतृत्व प्रदान किया।
- इस छावनी के सैनिको ने ही शिवसिंह के नेतृत्व में " चलो दिल्ली मारो फिरंगी " का नारा दिया था।
- एरिनपुरा छावनी जोधपुर रियासत के अन्तर्गत थी।
- वर्तमान में एरिनपुरा सिरोही जिले में है।
- मारवाड़ रियासत की सैनिक टुकड़ी" जोधपुर लीजन " AGG की सुरक्षा में माउन्ट आबू में तैनात थी।
- जोधपुर लीजन के सैनिकों ने एक अंग्रेज अलेक्जेंडर की हत्या कर दी और एरियनपुरा आकर विद्रोह कर दिया।
- यहाँ से सैनिक क्रान्ति के मुख्य केन्द्र दिल्ली रवाना हो गए। जब इसकी खबर आऊवा के असंतुष्ट जागीदार कुशालसिंह चंपावत को लगी तो वह खेरवा गाँव में विद्रोहियों से आ मिला।

- अब आऊवा राजस्थान में 1857 की क्रांति का प्रमुख केन्द्र बन गया।

आऊवा की क्रांति

- आऊवा मारवाड़ रियासत (जोधपुर) का ठिकाना था।
- यहाँ के जागीरदार कुशालसिंह व मारवाड़ के शासक तख्त सिंह के बीच अनबन थी।
- तख्त सिंह ने आऊवा के विद्रोह को कुचलने के लिए अपने सेनापति ओनाडसिंह के नेतृत्व में सेना भेजी।
- ओनाडसिंह / अनारसिंह के साथ अंग्रेज सेनापति लेफ्टिनेंट हिथकोट (हैंटकोच) भी था।

बिथौड़ा का युद्ध (8 सितंबर 1857)

- मारवाड़ की सेना व कुशाल सिंह के बीच " **बिथोड़ा** " (पाली) का युद्ध लड़ा गया। इस युद्ध में कुशाल सिंह के नेतृत्व में विद्रोहियों की विजय हुई।
- मारवाड़ का सेनापति ओनाड सिंह लड़ता हुआ मारा गया।
- लेफ्टनेंट हिथकोट जान बचाकर भाग निकला।

चेलावास का युद्ध / गोरे- काले का युद्ध (18 सितंबर 1857)

- बिथोड़ा युद्ध में पराजय के बाद AGG जॉर्ज पेट्रिक लॉरेन्स स्वयं अंग्रेजी सेना लेकर आऊवा रवाना हुआ।
- मारवाड़ का पॉलिटिकल एजेंट (PA) मेक मोसन् भी उसके साथ था।
- अंग्रेजी सेना तथा विद्रोही सैनिकों के बीच 18 सितंबर 1857 को " चेतावास का युद्ध लड़ा गया।
- अंग्रेजी सेना पराजित हुईऔर PA मेक मोसन् मारा गया।
- जॉर्ज पेट्रिक लॉरेंस बच निकलने में कामयाब रहा।
- विद्रोहियों ने मेक मोसन् का सिर काटकर आऊवा किले के द्वार पर टांग दिया।

आऊवा की क्रांति का दमन

- ब्रिटिश सरकार ने AGG की पराजय को गम्भीरता से लिया।
- विद्रोहियों का पूर्ण दमन करने के लिये कर्नल होम्स (होल्मस) के नेतृत्व में बंबई नेटिव इन्फैंट्री आऊवा पहुंची।
- कर्नल होम्स की सहायता के लिए मारवाड़ का कार्यकारी PA मेजर मॉरिसन भी आऊवा पहुँच गया।
- 19 जनवरी 1858 को ब्रिटिश सेना ने आऊवा का घेरा डाल दिया।
- जब ठाकुर कुशाल सिंह को जीत की उम्मीद नहीं रही तो किले की सुरक्षा का भार पृथ्वीसिंह को सौंपकर आऊवा से निकल गया।
- वह सलूम्बर के ठाकुर जोधसिंह की शरण में चला गया।
- बाद में वह नीमच चला गया जहाँ उसने आत्मसमर्पण कर दिया। विद्रोही अंग्रेजी सेना से पराजित हुये।
- 24 जनवरी 1858 को आऊवा पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया ।
- इस प्रकार राजस्थान में 1857 की क्रांति के महत्वपूर्ण केन्द्र का पतन हो गया।
- ब्रिटिश सेना ने आऊवा को तहस - नहस कर दिया तथा बड़ी संख्या में आम नागरिकों को भी गोलियों से भून दिया गया ।
- भोरता, भीमलिया और लम्बिया गाँव पूरी तरह नष्ट कर दिये गए।
- अंग्रेजी सैनिक कुशाल सिंह की कुलदेवी "सुगाली माता" की मूर्ति को भी अजमेर ले गये।
- सुगाली माता के 10 सिर 52 हाथ है ।
- इन्हें 1857 की क्रान्ति की देवी कहा जाता है।
- कुशाल सिंह द्वारा विद्रोही सैनिको का साथ देने के आरोपों की जाँच के लिए मेजर टेलर आयोग नियुक्त किया गया।
- टेलर आयोग ने कुशाल सिंह को निर्दोष करार दिया ।
- इन्होंने अपना शेष जीवन उदयपुर में बिताया।
- 25 जुलाई 1864 को उदयपुर में ही ठाकुर कुशाल सिंह की मृत्यु हो गई।

कोटा में क्रान्ति

- कोटा में सैनिक छावनी नहीं थी।
- यहाँ पर विद्रोह जनता द्वारा किया गया जिसमे राजकीय सेनिको ने भी उनका साथ दिया।
- 15 अक्टूबर 1857 को यहाँ विद्रोह आरम्भ हुआ।
- विद्रोहियों ने कोटा महाराव रामसिंह द्वितीय को उनके किले में कैद कर दिया।
- मेहराब अली तथा वकील जयदयाल माथुर द्वारा विद्रोह को नेतृत्व प्रदान किया गया।
- नारायण पलटन तथा भवानी पलटन द्वारा कोटा के PA मेजर बर्टन उसके दो पुत्रो फ्रेंक तथा आर्थर एक डॉक्टर सर्जन सेडलर व उसके सहायक काँटम की हत्या कर दी।
- विद्रोहियों ने मेजर बर्टन के सिर कटे शव को पुरे कोटा शहर में घुमाया।
- राजस्थान में 1857 की क्रांति का यह ऐसा केन्द्र था जहाँ लगभग छह माह तक विद्रोहियों ने व्यवस्थित तरीके से शासन चलाया।
- कोटा विद्रोह का दमन करने के लिए H G रॉबर्टस के नेतृत्व सेना भेजी गई.। करोली के शासक मदनपाल ने कोटा विद्रोह का दमन करने में अंग्रेजो का साथ दिया।
- 29 मार्च 1858 को अंग्रेजी सेना ने कोटा पर अधिकार कर उसे धूल-धूसरित कर दिया।
- जयदयाल तथा मेहराब खां को गिफ्तार कर 30 मार्च 1858 को फाँसी पर चढ़ा दिया गया।
- मेहराब खां राजस्थान का एकमात्र मुसलमान क्रन्तिकारी था जिसे फाँसी दी गई.। · एक विद्रोही सैनिक हरदयाल भी मारा गया।
- PA मेजर बर्टन की हत्या में कोटा महाराव की भूमिका की जाँच के लिए एक आयोग बनाया गया जिसने महाराव को दोषी ठहराया।

- इस प्रथा पर राज्य में सर्वप्रथम रोक 1832 ई. में कोटा रियासत ने लगाई थी ।

➢ **बेगार प्रथा**- वह काम जिसके बदले में मेहनताना प्राप्त न हो 'बेगार' कहलाती हैं ।

- एकीकरण के बाद बंधित श्रम पद्धति अधिनियम, 1976 द्वारा इस प्रथा पर रोक लगाई गई थी ।

➢ **सागड़ी प्रथा / बंधुआ मजदूर प्रथा**

- संपन्न व्यक्ति या महाजनों द्वारा उधार दी गई राशि के बदले किसी व्यक्ति को अपने घर पर नौकर के रूप में रखना सागड़ी प्रथा कहलाती हैं ।
- इस प्रथा पर रोक लगाने के लिए राज्य सरकार ने 1961 में सागड़ी निवारण अधिनियम बनाया ।

➢ **आन प्रथा** - मेवाड़ के महाराणा के प्रति ली जाने वाली स्थायी भक्ति की शपथ ही '**आन प्रथा**' कहलाती थी ।

➢ **कूकड़ी की रस्म** - इसमें सांसी जनजाति की युवती को शादी होने पर अपने चारित्रिक पवित्रता की परीक्षा देनी होती हैं।

➢ **चारी प्रथा** - भीलवाड़ा के खेराड़ क्षेत्र में प्रचलित इस प्रथा में लड़की के परिवार वाले लड़के के घर वालों से दहेज की तरह नकद राशि(कन्या मूल्य) लेते हैं ।

➢ **रियाण** - मारवाड़ में 'रियाण' का अर्थ सभा होती हैं जिसमें अफीम गालने और एक-दूसरे को प्रदान करने की प्रथा हैं ।

➢ **मौताणा प्रथा**- मौताणा प्रथा में किसी व्यक्ति की मौत दुसरे व्यक्ति की वजह से हुई है तो उससे 20 लाख तक का जुर्माना वसूला सकता है ।

अध्याय – 10

राजस्थान की वेशभूषा एवं आभूषण

❖ राजस्थान में पुरुष वस्त्र (वेशभूषा)

➢ **पगड़ी**

- इसको पाग, पेचा, फालियो, साफा, घुमालो, फेटो, सेलो, अमलो, लपेटो, बागा, शिरोत्राण, फेंटा आदि नामो से भी जाना जाता हैं।
- यह सिर पर लपेटे जाना वाला लगभग 5.5 मीटर लम्बी एवं 40 सेमी. चौड़ी होती हैं।
- उदयपुर की पगड़ी तथा जोधपुर का साफा प्रसिद्ध हैं।
- युद्ध भूमि में केसरिया पगड़ी, दशहरे पर काले रंग की मंदील पगड़ी, होली पर फूल-पत्तियों वाली पगड़ी, विवाह पर पंचरंगी पगड़ी, श्रावण में लहरिया पगड़ी पहनी जाती हैं।
- रक्षाबंधन के अवसर पर बहिन भाई को मोठड़ा साफा देती हैं।
- मीणा एवं गुर्जर जाति की पगड़ी को फेटा कहते हैं।

➢ **धोती**

- पुरुष द्वारा कमर से घुटने तक पहना जाने वाला वस्त्र हैं।
- आदिवासियों/भीलों द्वारा पहनी जाने वाली धोती ढेपाड़ा/डेपाड़ा कहलाती हैं।
- सहरिया जनजाति के लोग धोती को पंछा कहते हैं।

➢ **अंगरखी/बुगतरी**

- पूरी बाहों का बिना कॉलर एवं बटन वाला कुर्ता जिसे बांधने के लिए कसें (डसें) होती हैं।
- यह प्रायः सफेद रंग का होता हैं जिस पर कढ़ाई की होती हैं ।

➢ **पोतिया**

- भील पुरुषों द्वारा पगड़ी के स्थान पर बांधा जाने वाला वस्त्र पोतिया कहलाता हैं।

➢ **शेरवानी**

- शादियों में पुरुषों द्वारा पहने जाने वाला वस्त्र जो घुटने से लम्बा एवं कोटनुमा होता हैं।

➢ **पायजामा**

- अंगरखी, चुगा और जामें के नीचे कमर व पैरों में पहना जाने वाला वस्त्र पायजामा कहलाता हैं।

➢ **चुगा**

- इसे चोगा भी कहते हैं। यह अंगरखी के ऊपर पहना जाने वाला वस्त्र होता हैं।

➢ **आतमसुख**

- तेज सर्दी से बचने के लिए शरीर पर ऊपर से नीचे तक पहने जाने वाला वस्त्र।

➢ ***बिरजस (ब्रिजेस)***
- *यह पायजामे के स्थान पर पहना जाने वाला चूड़ीदार वस्त्र होता है।*

➢ ***कमरबंध***
- *इसे पटका भी कहते हैं।*
- *यह जामा के ऊपर कमर पर बाँधा जाने वाला वस्त्र होता है, जिसे तलवार या कटार को फंसाया जाता है ।*

➢ ***पछेवड़ा***
- *तेज सर्दी में ठण्ड से बचाव के लिए पुरुषों द्वारा कम्बल की तरह ओढ़े जाने वाला मोटा सूती वस्त्र पछेवड़ा कहलाता है।*

➢ ***अंगोछा***
- *धूप से बचने के लिए पुरुषों द्वारा सिर पर बाँधा जाने वाला वस्त्र अंगोछा कहलाता है।*

- ***<u>राजस्थान में पुरुषों के आभूषण</u>***

➢ ***सिर***
- *कलंगी, सिरपेच, सेहरा, मुकुट।*

➢ ***कान***
- *मुरकी, ओगनिया, झेला, लूंग।*

➢ ***गला***
- *कंठा, चैंकी, फूल।*

➢ ***हाथ***
- *कड़ा, मूरत, ठाला, ताती, माठीं*

❖ ***राजस्थान में महिलाओं (स्त्रियों) के वस्त्र/वेशभूषा***

➢ ***कुर्ती और कांचली***
- *स्त्रियों द्वारा शरीर के ऊपरी हिस्से (कमर के ऊपर) पहनी जाती हैं।*
- *कांचली के ऊपर कुर्ती पहनी जाती है, जिसमें कांचली के बांहें होती है जबकि कुर्ती के बांहें नहीं होती हैं।*

➢ ***घाघरा***
- *इसे लहंगा, पेटीकोट, घाबला आदि नामो से भी जाना जाता हैं।*
- *यह कमर से नीचे एड़ी तक पहना जाने वाला घेरदार वस्त्र होता है, जो कलियों को जोड़कर बनाया जाता है।*
- *आदिवासियों के घाघरे को कछाबू कहते हैं।*
- *आदिवासियों के नीले रंग के घाघरे को नांदना कहते हैं।*

➢ ***ओढ़नी (लुंगड़ी)***
- *महिलाओं द्वारा यह सिर पर ओढ़ी जाती हैं।*
- *लहरिया, पोमचा, धनक, चुंदरी, मोठड़ा आदि लोकप्रिय ओढ़नियां हैं।*
- *डूंगरशाही ओढ़नी जोधपुर की प्रसिद्ध हैं।*
- *ताराभांत की ओढ़नी आदिवासी महिलाओं द्वारा ओढ़ी जाती हैं।*

➢ ***लहरिया***
- *यह श्रावण मास की तीज को पहने जाने वाली अनेक रंगों की ओढ़नी हैं।*
- *समुंद्री लहर नामक लहरिया जयपुर में रंगा जाता हैं।*

➢ ***मोठड़ा***
- *जब लहरिया की धारियां एक-दूसरे को काटती हुई बनाई जाती है, तो वह मोठड़ा कहलाती हैं।*
- *मोठड़ा जोधपुर की प्रसिद्ध हैं।*

➢ ***सलवार***- *कमर से लेकर पांवों में पहना जाने वाला वस्त्र सलवार कहलाता हैं ।*

➢ ***कुर्ता***- *यह शरीर के ऊपरी हिस्से पर पायजामा के ऊपर पहना जाने वाला वस्त्र होता हैं।*

➢ ***कटकी***- *अविवाहित व आदिवासी युवतियां द्वारा ओढ़ी जाने वाली ओढ़नी कटकी कहलाती हैं।*

❖ ***आदिवासी महिलाओं के वस्त्र***
➢ *ताराभांत की ओढ़नी*
➢ *केरी भांत की ओढ़नी*
➢ *सावली भांत की ओढ़नी*
➢ *लहर भांत की ओढ़नी*
➢ *ज्वार भेंट की ओढ़नी*
➢ *लूगड़ा*
➢ ***रैजा*** - *सहरिया स्त्री का विवाह वस्त्र*
➢ ***चूनड़*** - *यह एक ओढ़नी होती हैं, इसमें बिंदियों का सयोंजन होता हैं।*
➢ ***नादना*** - *यह आदिवासी महिलाओं द्वारा पहना जाने वाला प्राचीन वस्त्र होता हैं।*

❖ ***राजस्थान में स्त्रियों के प्रमुख आभूषण***

➢ ***सिर के आभूषण***
- *शीशफूल, (सिरफूल या सिरेज), टिका, सिरमांग, रखड़ी (घुंडी) या बोर (बोरला), गोफण, पतरी, टिकड़ा, मेमंद, फूलगुघर, मैंण काचर, खींच, मोदियो आदि ।*

➢ ***ललाट (मस्तक) के आभूषण***
- *बिन्दी, टीका, टीडीभलको, तिलक, सांकली, दामिनी, ताबित, झेला, बोरला, सिवतिलक आदि।*

➢ ***नाक के आभूषण***
- *चूनी, चोंप, नथ, लटकन, लूंग, कांटा, फीणी, बाली, बुलाक, बेसरि, बजट्टी, भंवरिया, वारी, खीवण,।*

➢ ***कान***- *जमेला, झुमका, झेला, बाली, टोटी/बजूली, कर्णफूल, सुरलियाँ, पीपलपत्रा, पाटीसूलिया, अंगोटिया, ऐरंगपता, कोकस, खींटली, गुड़दौं, छैलकड़ी, झूंटणौं, बाळा, माकड़ी, मच्छी ।*

➢ ***दांत*** - *चूंप, रखन*

अध्याय – 2

भारतीय रिजर्व बैंक और उसके कार्य

भारत में Banking व्यवस्था में सर्वोच्च स्थान RBI का है RBI की स्थापना, RBI । April अधिनियम 1934 के अन्तर्गत 1935 में की गई थी । Jan 1949 इसका राष्ट्रीयकरण किया गया एवम् भारत सरकार के अधीन लाया गया RBI के प्रथम governor sir ओस्बोर्न स्मिथ थे RBI के प्रथम भारतीय governor C.D. Desh mulkh थे RBI की प्रमुख जिम्मेदारीयों को दो हिस्सों में वर्गीकृत किया जा सकता है - पारम्परिक जिम्मेदारीयाँ एवम् अस्थाई जिम्मेदारीयाँ, अस्थाई जिम्मेदारियां समय पर उत्पन्न होती हैं एवम् इनके पूरे हो जाने पर RBI इन जिम्मेदारियां मुक्त हो जाती हैं उदाहरण स्वरूप वित्तिय समावेशन इससे भिन्न RBI की पारम्परिक जिम्मेदारियां निरन्तर चलती रहती हैं यह जिम्मेदारियां निम्नलिखित हैं.

- RBI भारत सरकार एवम् राज्य सरकारों के लिए बैंक का कार्य करती हैं अर्थात् भारत सरकार एवम् राज्य सरकारें अपनी अधिशेष सारी RBI के पास जमा रख सकती हैं एवम् आवश्यकता पड़ने पर RBI इनके लिए ऋण की प्राप्ति भी करती हैं वर्तमान में सिक्किम को छोड़ सभी राज्यों को यह सुविधा प्रदान करती हैं। केन्द्र शामिल प्रदेशों में यह सुविधा मात्र पुडुचेरी को प्राप्त ।
- RBI बैंकों के लिए बैंक का कार्य करती हैं अथार्त बैंक अपनी अधिशेष राशि RB के पास जमा रख सकते हैं एवम् आवश्यकता पड़ने पर RBI से ऋण प्राप्त कर सकती हैं
- RBI, अनुसुचित बैंकों की स्थापना के लिए लाइसेंस प्रदान करती हैं. एवम् भारत में बैंकिक व्यवस्था का संचालन भी करती हैं विदेशी बैंकों को स्थापना के उपरान्त भी नई शारवाएं स्थापित करने के लिए RBI से अनुमति की आवश्यकता पड़ती हैं भारतीय बैंक RBI से अनुमति के बिना शारवाएं स्थापित कर सकती हैं परन्तु RBI के नियमों के अनुसार इनकी कम से कम 1/4 शरवाएं ग्रामीण क्षेत्रों में होनी चाहिए
- RBI भारत में मॉद्रिक नीतियाँ जारी करती हैं जिसके माध्यम से यह तरलता को नियंत्रित करती हैं एवम् मुद्रा स्फीति को नियंत्रित करती हैं साथ ही आर्थिक संवृद्धि को प्रबंधित करती हैं

RBI कुछ श्रेणी की गैर बैंकिंक वित्तिय संस्थानों को भी नियंत्रित करती हैं (Non Banking Finacial companies NBFC) इन वित्तीय संस्थाओ छाया बैंक
RBI भारत में विदेशी मुद्रा का भण्डारन करती हैं भारत अपने विदेशी मुद्रा कोष मे अमेरिकी डोलर, पांड, यूरो, यन एवम् सोना रखता हैं।
RBI भारत में एक रूपय से ऊपर के नोट जारी करती हैं एक रुपये का नोट एवम् सभी सिक्कें भारत सरकार जारी करती हैं । परन्तु भारत सरकार द्वारा जारी किए गए सिक्कों को ही economy में प्रवाहित करने की जिम्मेदारी RBI की ही होती हैं
RBI अधिनियम 1934 के अनुसार एक वित्तिय वर्ष में RBI 10 हजार करोड़ रुपय से ज्यादा नए नोट जारी नहीं कर कर सकती RBI 10 हजार रुपिए से ज्यादा के मूल्य के नोट जारी नहीं कर सकती

भारत में नए नोट जारी करने की व्यवस्था

भारत में नए नोट जारी करने के लिए न्यूनतम आशित प्रणाली Minimum Reser का प्रयोग किया जाता हैं इसके अन्तर्गत RBI 200 रूपए के मूल्य के बराबर का एक न्यूनतम कोष तैयार करती हैं एवम इसके बदले वह एक वित्तिय वर्ष में 10 हजार करोड़ रुपए तक के नए नोट जारी कर सकती हैं इस 200 रुपये के मूल्य के बराबर के कोष में 115 रूपए के मूल्य का सोना रखा जाता हैं एवम् 85 रूपए मूल्य के बराबर का अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा रखी जाती हैं नए नोट छापने के लिए RBI तीन प्रमुख आधारों को ध्यान में रखती हैं

- बाच्छनिया, संवृद्धि दर के लिए Recined हैं उतना नोट छापते हैं।
- मुद्रा स्फीति नियंत्रण से बाहर ना चल जाए
- घरेलू मुद्रा का विनिमय दर अन्य विदेशी मुद्रा के विनिमय दर से नीचे न आ जाए

भारत में नए, छापने के लिए मुद्राणालयों कुल चार स्थानों पर हैं-

देवास (Madhya Pradesh) नासिक (महाराष्ट्र) मैंसूर (कर्नाटक) सालबोनी (पं. बंगाल)
इन चारों मुद्राणालयों में से प्रथम दो पर भारत सरकार का मालिका अधिकार तथा अन्य दो पर RBI का मालिकाना अधिकार हैं। भारत में सिक्के भी चार स्थानों पर तैयार किए जाते हैं नोएडा, मुम्बई, कोलकाता, हैदराबाद ।
नए नोट छापने की एक अन्य व्यवस्था भी हैं परन्तु इसका प्रयोग भारत में नहीं होता यह व्यवस्था अनुपाती आरसी व्यवस्था हैं (Prahetional Resere system) इसके अन्तर्गत जिस अनुपात में नए नोट का मूल्य बढ़ता हैं उसी अनुपात में रखे गए कोष को बढाना पड़ता हैं

भारत में बैंकिंक व्यवस्था का इतिहास

भारत में स्थापित पहली बैंक Bank of Hindustan थी इसकी स्थापना Alexandey and Company 1770 में की थी कुछ समय बाद यह बैंक बन्द हो गई। East India company के एक के बाद एक तीन अन्य बैंकों की स्थापना की
1806-Bank of Bengal.
1840 - Bank of Bombay

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - ⬇ (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

UP Police Constable 2024 - http://surl.li/rbfyn (98 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
MPPSC Prelims 2023	17 दिसम्बर	63 प्रश्न (100 में से)
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये

whatsapp -https://wa.link/98bnwi 1 web.- https://shorturl.at/belyI

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

Our Selected Students

Approx. 483+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
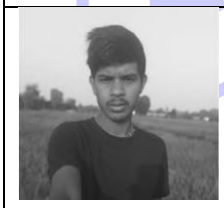	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
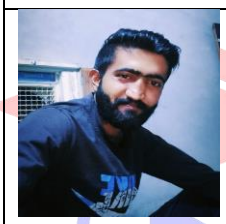	**Govinda Jangir**	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
	Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel	Rac batalian	729141135	Dis.- Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota
	Sanjay	Haryana PCS	96379	Jind (Haryana)

And many others.....

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

WhatsApp करें - https://wa.link/98bnwi

Online Order करें - https://shorturl.at/ixJQI

https://shorturl.at/belyI

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE